भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 44 अंक : 3	18.6.2021 शुक्रवार (मई- जून)	वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

हे प्रभु! अपनाया नहीं होता जो आपने तो होता हमारा क्या हाल....

जिनके वात्सल्य के समक्ष सौ-सौ जननी का प्रेम लाजे ऐसे **गुरुहरि योगीजी महाराज का प्राकट्य पर्व बैशाख कृष्णा द्वादशी,** अबकी **7 जून** को हम सबके लिए मंगलकारी बनाने आया।

गुरुहरि योगीजी महाराज ज़ोर-ज़ोर से ताली बजाते हुए, डोलते-डोलते जब भजन गाते, तो झांकी होती कि अहंरहित भूल्के की भांति किस प्रकार वे समग्र रूप से श्रीजी महाराज में लय-लीन हैं। अपनी नैसर्गिक साधुता से प.पू. बापा ने सहज ही चैतन्यों का साक्षी भेदा, अपने स्पर्श से अंतर पवित्र किया, अपना निज सान्निध्य देकर चेतना में प्रभु प्राप्ति की ललक जगाई और अपने निर्व्याज वात्सल्य में सराबोर करके, मुमुक्षुओं को साधु बनने के लिये प्रेरित किया। फलस्वरूप **1961** में दिनांक **11 मई** को अपनी प्राकट्य तिथि पर प्रथम 51 शिक्षित युवाओं को **भागवती दीक्षा** दी।

1960 में **रामनौमी** के अगले दिन **चैत्र शुक्ला दशमी** को **गुरुहरि योगीजी महाराज** के वरद् हस्तों **गोंडल मंदिर** में **प.पू. गुरुजी** ने **पार्षदी दीक्षा** प्राप्त की थी और... एक वर्ष पश्चात् यानि **1961** में **भागवती दीक्षा** प्राप्त करके धन्य हुए। अबकी बार गुरुहरि योगीजी महाराज की प्राकट्य तिथि दिल्ली मंदिर से जुड़े मुक्तों के लिए अत्यधिक विशिष्ट कही जाये, क्योंकि **गढड़ा के नये मंदिर** में **गुरुहरि योगीजी महाराज से भागवती दीक्षा** लिये **प.पू. गुरुजी** को **60 साल** पूरे हुए – **हीरक जंयती** कही जाये। भगवा वस्त्रों में छः दशक की अद्भुत यात्रा... साधु के कपड़े लेना एक बात है, लेकिन अपने धर्म-नियम में अचल रहकर, साधुता के कल्याणकारी गुणों से संबंध में आये चैतन्यों को भगवान बाँटना–वो अलग ही कक्षा कही जाये।

1960 से 1966 – छः साल तक प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज का स्थूल सान्निध्य पाया। उस दौरान प.पू. बापा ने उनकी चेतना को देख कर उन्हें बताया था–

गुणातीतानंदस्वामीजी ने जिन 200 मुक्तों को ब्रह्मविद्या पढ़ाई थी, उनमें से तुम एक हो।

संजोगों के आधीन, 1966 की 28 मई को प.पू. बापा का स्थूल सान्निध्य छूटा, लेकिन गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी और प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी की सेरेछाया में, प.पू. गुरुजी नये उठाव में साथ देने जुड़ गये। और... फिर **गुरुहरि बापा के संकल्प को लेकर, गुरुहरि काकाजी की आज्ञा से, दिल्ली-उत्तरभारत में भगवान स्वामिनारायण का संदेशा फैलाने के लिए, 1967-68 में दिल्ली आये।** हालाँकि गुरुहरि काकाजी का यह निर्णय उनके दिमाग़ में नहीं बैठ रहा था, क्योंकि तब यहाँ तो दूर-दूर तक **'स्वामिनारायण'** नाम तक कोई जानता नहीं था। लेकिन, गुरुहरि काकाजी के वचन में अतिशय श्रद्धा, उनके प्रति लगाव और गुरुभक्ति अदा करने की भावना से उन्होंने अंधेरे में ही छलाँग लगा दी। गुरुहरि काकाजी को राज़ी कर लेने की एक चाहना से, गुरुहरि काकाजी के स्थूल सान्निध्य का भी लालच छोड़ कर दिल्ली में स्थायी रूप से बस गये और... गुरुहरि काकाजी को अंतर्यामी, सर्वज्ञ, कर्ता-हर्ता मान कर, भजन का एकमात्र आधार लेकर, यहाँ का कार्यभार संभाला। प्रभु की मूर्ति के संग रह कर, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उन्होंने आनंद किया। प.पू. गुरुजी के अथक परिश्रम से दिल्ली-उत्तरभारत में सत्संग का विकास होने लगा। **'कुटुंबभाव'** से जीवन जीता मानो एक परिवार तैयार हुआ...। अपने जीवन के तकरीबन **50 साल** से प.पू. गुरुजी हमारे लिये ही जी रहे हैं, हर पल भक्तों के लिए न्यौच्छावर की है। अपने निश्छल प्रेम से सभी का साक्षी भेद कर, प.पू. गुरुजी ने वात्सल्यभाव से मुक्तों को सींचा है। प.पू. गुरुजी हमारे साथ, हमारे जैसे बन कर, हमारी कक्षा पर जिये, हम में ओतप्रोत होकर खूब सस्ते बने। इसलिए उनकी जैसी महिमा है, वह सही अर्थ में हम समझ ही नहीं पाये। हमारे चैतन्य के लिए उन्होंने निरंतर जो छुपा परिश्रम किया – उसके प्रति, हम अपने स्वभाव, मनमाने ढंग की वृत्तियों के विलास में ही रमे रह कर, लापरवाह जैसे रहे।

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी द्वारा **प्रकरण 4 की 143वीं बात** में सत्पुरुष की महिमा की कही बात बताती है कि वास्तव में तो **प.पू. गुरुजी** को हमें इस दृष्टि से निहारना था।

...बड़े हैं, भगवान को अखंड धारे हुए हैं, भगवान की आज्ञा में वर्तते हैं,
कसनी सहते हैं, भगवान इनके वश हैं, वे जो कहें वो भगवान करते हैं,
वे कहें वैसे भगवान घूमते हैं, भगवान को उन्होंने जीता है, भगवान के अभिप्राय को जानते हैं,
मोक्ष के दाता हैं,
उनका दर्शन भगवान के दर्शन तुल्य है, उनका पूजन भगवान के पूजन तुल्य है,
गर्भवास, यमपुरी व चौरासी के दुःख से वे छुटकारा दिलाते हैं
और
भगवान का जो विहद अक्षरधाम है, वहाँ हमें ले जाते हैं,
भगवान के साधर्म्य को प्राप्त कराते हैं–ऐसे वे बड़े हैं।
उनके बिना भगवान रह नहीं पाते,
उनके दर्शन से पंच महापाप ख़ाक हो जाते हैं,

उनकी इन्द्रियों की क्रियाओं से ब्रह्मांड सचेतन होता है,
उनसे काल, कर्म, माया थर-थर काँपते हैं,
जैसे देह को पूजने से जीव का पूजन हो जाता है, वैसे ही इस साधु का पूजन करने से भगवान का पूजन हो जाता है,
वे अन्नदाता हैं, अंतर्यामी हैं, सर्वज्ञ हैं, इनका किया होता है,
वे मनुष्य जैसे दिखाई पड़ते हैं, परंतु मनुष्य जैसे नहीं हैं, भगवान उनमें रहे हैं,
अविनाशी धाम की प्राप्ति कराते हैं, कर्ता होते हुए भी अकर्ता हैं,
वृक्ष की भाँति उनका देह दूसरों के लिए है,
संत के जो लक्षण कहे गये हैं, वैसे वे हैं, 'कामिल, काबिल सब हुन्नर तेरे हाथ' – ऐसे समर्थ हैं...

मूल गुजराती :

...મોટા છે, ભગવાનના મળેલા છે, ભગવાનના વચનમાં વર્તે છે,
ભીડો ખમે છે, ભગવાન એને વશ છે, ભગવાન એ કહે એમ કરે છે,
ભગવાન એ કહે એમ કરે છે, ભગવાનને એણે જીત્યા છે, ભગવાનના અભિપ્રાયના જાણનારા છે,
મોક્ષના દાતા છે,
એને દર્શને ભગવાનનું દર્શન થયું, એને પૂજ્યે ભગવાન પૂજાઈ રહ્યા,
ગર્ભવાસ, જમપુરી ને ચોરાશીથી એ મુકાવે છે
ને
વિહદ જે ભગવાનનું અક્ષરધામ તેને પમાડે છે
ને
ભગવાનના સાધર્મ્યપણાને પમાડે છે, એવા એ મોટા છે,
એના વિના ભગવાનને ચાલતું નથી,
એના દર્શને પંચ મહાપાપ બળી જાય છે,
એની ઇંદ્રિયુંની ક્રિયાયે કરીને બ્રહ્માંડ સચેતન થાય છે,
એનાથી કાળ, કર્મ ને માયા થરથર કંપે છે,
જેમ દેહને પૂજ્યે જીવ પૂજાય રહ્યો તેમ આ સાધુને પૂજ્યે ભગવાન પૂજાઈ રહ્યા,
એ અણ્ણદાતા છે, અંતર્યામી છે, સર્વજ્ઞ છે, એનું કર્યું થાય છે,
એ મનુષ્ય જેવા દેખાય છે પણ મનુષ્ય જેવા નથી, ભગવાન એના ભેળા રહ્યા છે,
અવિનાશી ધામને પમાડે છે, કર્તા થકા અકર્તા છે,
વૃક્ષની પેઠે એનો દેહ પરને અર્થે છે,
સંતનાં લક્ષણ કહ્યાં છે એવા છે, કામીલ, કાબીલ, સબ હુન્નર તેરે હાથ એવા છે...

तो, अब जब से जागे, तब से ही सुबह – यूं जाग्रत होकर 'स्वामी' की कही बात के नज़रिये से, प.पू. गुरुजी को निहारेंगे, तो ही कुछ प्राप्त कर पायेंगे।

गुरुहरि काकाजी तकरीबन हर सभा के अंत में कहते – ***'जाओ, अब तक का सब माफ़...'***

गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी, संतभगवंत साहेबजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई जैसे स्वरूपों के रूप में अति दयालु विभूतियाँ हमें मिली हैं; यदि दिल की सच्चाई से हमें दिव्य जीवन जीने की चाह होगी, तो वे हम पर कृपादृष्टि करेंगे ही।

आज कोरोना लॉकडाउन के कारण, स्थूल रूप से भक्तों से दूर रहते हुए भी, प.पू. गुरुजी संकल्प से चैतन्यों की हर प्रकार से परवरिश कर रहे हैं, प्रतिकूल परिस्थितियों में बल प्रदान कर रहे हैं और भगवान भजने के मार्ग पर अग्रसर कर रहे हैं। सभी के मन में सहज ही खेद ज़रूर है कि जिस प्रकार **प.पू. गुरुजी के भागवती दीक्षा दिन की हीरक जयंती का उत्सव मनाना था,** वह कोरोना संक्रमण के कारण नहीं मना पाये... लेकिन **12 जून** – निरपेक्ष सेवा और पराभक्ति के स्वरूप **गुरुहरि काकाजी महाराज के प्राकट्य पर्व** निमित्त गद्‌गद् हृदय से प्रार्थना है कि आपकी ही कृपा से हमें मिले ये प्रत्यक्ष स्वरूप, वर्षों तक निरामय स्वास्थ्य से अपने दर्शन, सेवा, समागम और मूर्ति का सुख देकर कृतार्थ करें...

संतभगवंत साहेबजी अकसर बताते हैं–

काकाजी हमारे साथ हमारे जैसे बन कर रहे। खूब आनंद कराते, कथा करते, बातें करते; उनके लिए कुछ भी व्यवस्था ना हो, लेकिन वे चला लेते।

हमें भगवान भजने हैं और यह जीवन योगीजी महाराज के लिए समर्पित कर देना है, यह भाव यदि हमारे में प्रगटाया हो, तो वह दादुकाका ने!

तो वाक़ई, इन स्वरूपों ने यदि हमें अपनाया नहीं होता, तो आज के इस कलियुग में हमारा क्या हाल होता, यह सोच कर भी रूह कांप जाती है। **जिनकी कृपादृष्टि से आज के माहौल में हम निश्चिंतता, निर्भयता से ब्रह्मानंद कर पाते हैं, ऐसे गुरुहरि काकाजी महाराज के प्राकट्य पर्व पर** पिछले वर्ष 12 जून को अनुपम मिशन के सद्‌गुरु संत **प.पू. अश्विनभाई** ने जो माहात्म्यगान किया था, उससे समझें कि **गुरुहरि काकाजी जैसी अलबेली 'दिव्य विभूति'** शाश्वत् सुख देने के लिए, हमारे जीवन में कैसे ओतप्रोत हुई...

પ.પૂ. અશ્વિનભાઈ

પ.પૂ. રતિભાઈએ, પ.પૂ. શાંતિદાદાએ અદ્‌ભુત રૂડા આશીર્વાદ આપ્યા. આપણા સહુ વતીની પ્રાર્થના પણ એમણે સાહેબદાદાના ચરણોમાં કરી. અમારી પેઢીના સાધકો ભાગ્યશાળી કે એમને કાકાજી-પપ્પાજીના સદેહે ગુરૂહરિ યોગીજી મહારાજ પ્રત્યે ભકિત અદા કરતા જોવા ને જાણવાની અદ્‌ભુત તક મળી.

કાકાજી એક આધ્યાત્મિક પુરૂષ! બીજી દૃષ્ટિએ જોઈએ તો હી વૉઝ એ બેસ્ટ લીડર. આપણે એમને આપણા **'ગુણાતીત સમાજના સ્થાપક'** કહીએ છીએ-માનીએ છીએ. આપણા **'ગુરૂહરિ'** કહીએ છીએ. દાદુકાકા પાસેથી બે શબ્દો સાંભળેલા: એમણે રતિકાકાને મંત્ર આપ્યો–**'એકતા એ જ એકાંતિકપણું!'** અમે એમની પાસેથી વારંવાર સાંભળેલું – **'ભિન્ન અંગવાળા સાથે મૈત્રી કરો'**.

અને જ્યારે... આપણા જુદા-જુદા કેન્દ્રો અસ્તિત્વમાં આવ્યા–સોખડા, સાંકરદા, જ્યોત, અનુપમ મિશન,

દિલ્હી, સમઢિયાળા – ત્યારે દાદુકાકા **'ભાવાત્મક એકતા'** શબ્દનો પ્રયોગ કરતા. ત્યારે એ સાંભળવું ગમતું. કેટલું સમજાણું, કેટલું જીવનમાં અનુભવમાં આવ્યું–એ તો એવા એ જાણે ને આતમરામ યોગી જાણે. પણ **મોટા પુરૂષોનો સંકલ્પ અને ગુરૂહરિ સાહેબદાદાનું જીવન**–એણે એ વાતોને આપણા જીવન આચરણમાં લાવીને બતાવી. રતિકાકાએ જે પ્રેસ કૉન્ફરન્સની વાત કરી, એ આખા પ્રસંગને દાદુકાકાએ એક નેતા તરીકે પોતા ઊપર લઈ લીધો હતો. તે વખતે બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજનો પ્રાગટ્ય દિન ને ગુણાતીત જ્યોતની સ્થાપના હતી. આખા પ્રસંગની સમગ્ર જવાબદારી દાદુકાકાએ પોતાના શીરે લીધી હતી. **એવું વન મૅન આર્મીની રીતે એ જીવતા કે વર્તતા હોય, એ દર્શન કરવાનું સદ્ભાગ્ય અમને પ્રાપ્ત થયું છે.**

નેતાગીરીનો એક મોટો ગુણ એ કે પોતાના સાથીદારોની ખામીઓ જોવાને બદલે, એ જેવા હોય એવા–એમનામાં રહેલી ખૂબીઓનો ઉપયોગ કરીને એને કામે લગાડવી અને ભગવાનની સેવા અર્થે વાપરતી કરવી.

બાપાનો જેમાં રાજીપો હતો એવી બધી જ બાબતોમાં એક નેતા તરીકે પોતાના તંત્રને સમગ્રપણે હોમીને દાદુકાકાએ કામ કર્યું. દરેક કામમાં એ મારૂં પોતાનું જ કામ હોય, એવી રીતે એ કરતા. પોતે આગળ થાય અને પોતાના સાથીદારોને સાથે લે. એમની **એગ્રી ઓરિયન્ટનો સ્ટાફ, એની બધી ગાડીઓ, વાહનો અને સાથે જ્યોતિબેન, તારાબેન જેવી બ્હેનોને પણ લઈ એ ઇડર ગયેલા.** આમ સમગ્રતાથી પોતાનું જે કંઈ પણ હતું, એને એમણે કામે લગાડી દીધેલું. સાબરકાંઠા સાથે દાદુકાકાને કોઈ પ્રાથમિક પરિચય નહીં. ઇલેક્શન જોડે એમને કાંઈ લેવા-દેવા નહીં. માત્ર ને માત્ર યોગીજી મહારાજની આજ્ઞા અને નંદાજીનો શાસ્ત્રીજી મહારાજ સાથેનો સંબંધ જોઈને, જાણે પોતે ઇલેક્શનમાં ઊભા હોય, એવી રીતે એમણે પ્રચારનો મોર્ચો સંભાળી લીધો'તો. ફળસ્વરૂપે યોગીબાપાએ કાકાજીને ગોંડલમાં ભગવાનના સાક્ષાત્ દર્શન કરાવ્યા.

૫૧ શિક્ષિત યુવાનોને દીક્ષા આપવાનો યોગીજી બાપાનો સંકલ્પ. એ પ્રસંગે પણ **દાદુકાકા**એ આગળ પડીને પોતાના પરિવારના, પોતાના સ્નેહીજનોના પુત્રોને પ્હેલા એમાં હોમ્યા. બાપાને અર્થે જીવી લેવા જેવું છે, એવા માહાત્મ્યનું એમણે સિંચન કર્યું અને જેમને-જેમને કૌટુંબિક વિરોધ હતો, એ વિરોધને શાંત પાડવામાં પણ દાદુકાકા ઢાલ બનીને આગળ ઊભા રહ્યા. યોગીજી મહારાજ સુધી એ ફરિયાદ પણ એમણે પ્હોંચવા દીધી નહીં. પોતે માથે લીધું, ગાળો સાંભળી, અપયશ લીધો, પણ **'યોગીબાપા રાજી થાય છે'** તો આ દીકરાને સાધુ કરવો–**એ બાપાનો સંકલ્પ કેમ કરીને પૂરો થાય–એજ એમને લક્ષ્ય હતુ. ગુરુહરિ સાહેબદાદાના વર્તમાન જીવનને જોઈએ અને જે રીતે એ આપણને સહુને માર્ગદર્શન આપીને જીવડાવી રહ્યા છે, ત્યારે આ ક્વૉલીટીનું આપણને સાહેબદાદામાં પણ દર્શન થાય છે.**

મારો વ્યક્તિગત અનુભવ કહું તો **પ.પૂ. હરિપ્રસાદસ્વામીજી** એક ના એક દીકરા હતાં. એમના માતુશ્રી કાશીબા એમને રજા આપે, એમાં પણ મહત્વની ભૂમિકા દાદુકાકાએ ભજવેલી અને હરિપ્રસાદસ્વામીજીને

સાધુની દીક્ષા માટે રજા-મંજૂરી અપાવેલી. આ બધુ વિદ્યાનગરના યુવક મંડળના સભ્ય તરીકે અમે જોયું છે-અનુભવ્યું છે. હરિપ્રસાદસ્વામીજીને સાધુ બનાવ્યા પછી મને ટપાલની સેવામાં જવાનો લાભ મળેલો. મારા માતુશ્રીને એ પસંદ ન્હોતું. એટલે મને પાછો લઇ આવવા માટે મારા મોટાભાઈને મોકલેલા. ત્યારે હું દાદર મંદિરે બાપા પાસે હતો. રાતની ટ્રેનમાં નિકળીને સવારના પ્હૉરમાં ભાઈ આવી ગયા ને સીધા યોગીજી મહારાજને મળ્યા. પ્રથમ મુલાકાત, કોઈ બીજો પરિચય પણ નહીં અને બાપા પાસે રડવા લાગ્યા કે મારો ભાઈ ઘરેથી ભાગીને સાધુ થવા માટે અહીં આવી ગયો છે. એટલે બાપાએ પૂછ્યું કોણ ? શું ? ક્યાંથી આવ્યા ? શું છે ?

પછી મને બોલાવીને કહ્યું કે તમારા ભાઈ આવ્યા છે. મેં કીધું બાપા મારે નથી જવું. બાપા બોલ્યા– ભાઈને રાજી કરી લ્યો, ભગવાન રાજી થઈ જશે. મુંબઈથી ગુજરાત આવવાની ટ્રેન, રાત્રે ઉપડે. એટલે આખો દિવસ દાદર મંદિર રહ્યા. ભાઈને જમાડયા અને **નિકળતી વખતે યોગીબાપાએ કહ્યું – તાડદેવ થઈને જજો.** છાત્રાલય નિમિત્તે કાકાજીનો પરિચય. હરિપ્રસાદસ્વામીજીને દીક્ષા આપી, ત્યારનો પણ કાકાજીનો પરિચય. એટલે અમે તાડદેવ ગયા. જઈને ઊભા રહ્યા. ભોજનનો સમય હતો, ટ્રેન બોમ્બે સેન્ટ્રલથી પકડવાની હતી. સોનાબા હાજર હતા. એમણે જમવા બેસાડી દીધા અને મેં દાદુકાકા આગળ મારી 'રામકહાની' કીધી કે મારા ભાઈ બાપા પાસે રડવા લાગ્યા અને બાપાએ તો મને કહ્યું – જાવ, ભાઈની જોડે અને ભાઈને રાજી કરી લ્યો. કાકાજીએ કીધું – રાજા, ગભરાઓ છો શું ? હું આવું છું આવતા અઠવાડિયે. આપણે સાથે પાછા આવશું. સંતોને બાપાએ જે દીક્ષા આપી તેમાં ઘણાં બધાંનાં આવા પ્રકરણ હતા. આજે સવારે આપણે પ.પૂ. અરૂણભાઈ વિષે સાંભળ્યુ'તું. **એક એક મુક્ત ભગવાનના થઈને જીવે, એની જાણે સો ટકા જવાબદારી પોતાને માથે છે, એવી રીતે દાદુકાકા દરેકના–પછી કોઈ પણ પ્રકારના એના કૌટુંબિક પ્રશ્ન હોય, પોતે માથે લઈ લેતા અને પોતે આગળ થઈ એની રક્ષાનું છત્ર લઈ, રક્ષાની ઢાલ-કવચ ભક્તોને ધરી દેતા–એ અમે અનુભવ્યું છે.**

આપ સહુ જાણો છો એ પ્રમાણે કાકા સોખડા આવ્યા. તે વખતે તૈયારી થતી'તી ગુણાતીત જ્યોતની. બ્હેનો આવશે, એમના માટે ગાદલા જોઈશે, તે ગાદલાના રૂ અને એને પિંજાવીને ગાદલા ભરાવવાનું કામ ચંદુભાઈ દાજીને સોંપવા કાકા સોખડા આવ્યા હતા. મેં ઘરે વાત કરી કે અમારાં ગુરુજી–કાકાશ્રી આવ્યા છે અને મારી ઇચ્છા છે કે આપણે ઘરે પધરામણી કરાવીએ અને જો ગોઠવાય તો એમને પ્રસાદ લેવાનું પણ ગોઠવીએ. મારા હેતને કારણે મારા માતુશ્રીએ 'હા' પાડી, ભલે લઈ આવજે તારા કાકાને. એમણે સરસ મજાની પૂરણપોળી બનાવેલી. કાકાજી જમવા બેઠા, હું ને કાકાશ્રી અને મારા માતુશ્રી. મોટાભાઈ, નાનાભાઈ કોઈ ઘરે હતાં નહીં. મારા વિષેની એમને જે કંઈ ફરિયાદ હતી તે મારી બા કાકાજીને કરતાં જાય અને કાકાજી એક પછી એક પૂરણપોળી જમતા જાય. ગરમ-ગરમ પૂરણપોળી, ઘી ચોપડીને પીરસાતી જાય અને કાકાજીએ એક ખાધી, બે ખાધી, ત્રણ ખાધી, ચાર ખાધી. ત્યાં સુધી મારા વિષેનો જે કંઈ બળાપો કાઢવો'તો એટલો બાએ કાઢ્યો. કાકાજી આ દરમ્યાન ઠંડા કલેજે એક પછી એક રોટલી જમે...

તમે વિચાર કરો **કોઈ માણસ તમારી સામે આટલું બધું બોલે અને તમે ઠંડા કલેજે જમી શકો, એ આધ્યાત્મિક અવસ્થા કેવી હશે! કેટલી સમતા, કેટલી સ્થિરતા, કેટલું ભગવાનનું કર્તાપણું.** યોગીજી મહારાજ માટે આ છોકરાને મૂંડાવું છે–એના માટે જે હાંભળવું પડે, એ વસૂલ છે! એનાથી વળી વિશેષ આનંદ શું? ગમે તે, જે કાંઈ ભાવ કાકાજીના હૃદયમાં હશે... કાકાજી જમ્યા અને મારા બા પણ શાંત થયા.

એક તરફી તમે કેટલું બોલ બોલ કરો? સામેવાળા કશું બોલે નહીં અને ખાધે જ રાખે, તો એ સંવાદમાં મજા પણ શું આવે?

જમી રહ્યા પછી કાકાજી મને કહે – હું વિદ્યાનગર જાઉં છું. તમે આવતી કાલે વિદ્યાનગર આવો, આપણે આણંદથી રાતે સાથે મુંબઈ પાછા જશું. કેટલી બધી એમને ગેરંટી કે જેને ઘરેથી રજા આપી નથી, જેને રજા લેવા માટે ખુદ યોગીબાપાએ પાછો મોકલ્યો છે. એવા મને આ સૂચના આપી.

કાકાના ગયા પછી મેં મારી બાની સાથે સંવાદ કર્યો. તમે હા પાડો કે ના પાડો, હું સાધુ થવાનો. જો 'હા' પાડશો તો મારા પુણ્યના તમે ભાગીદાર, 'ના' પાડશો તો હું તમને કંઈ કામ લાગવાનો નથી. એક અઠવાડીયુ હું સોખડા રહેલો. એ દરમ્યાન એમણે મારૂં વર્તન જોઈ લીધેલું અને થયું કે રહે કે ન રહે, આપણા માટે નક્કામો છે. સંસારના કોઈ કામમાં લાગવાનો નથી. મારી બાએ કાકાજીના કારણે મને રાજી-ખુશીથી રજા આપી. હું તો રાહ જોતો'તો, પોટલા ઊપાડી–પોટલા જેવું કંઈ હતું નહીં, જે કાંઈ થેલો હતો એ ઉપાડીને વિદ્યાનગર આવ્યો. વિદ્યાનગર બધાં ભાઈઓ છાત્રાલયમાં હતાં.

મને આવેલો જોઈને કાકાજી બોલ્યા – આવી ગયા રાજા! **'રાજા' એમનો સ્પેશિયલ શબ્દ હતો.** કેવી રીતે આવ્યા, હું નીકળ્યો એના પછી શું થયું–એની કાંઈ પૂછપરછ નહીં. અને તે જ દિવસે રાત્રે કાકાજી જોડે ટ્રેનમાં બેસી સીધો મુંબઈ પહોંચ્યો! હું દાદર ઉતર્યો અને કાકાજી સેન્ટ્રલ ઉતર્યા. જઈને હું યોગીબાપાની સેવામાં જોડાયો. આશ્ચર્ય એ કે યોગીબાપાએ એક પણ સવાલ પૂછ્યો નહીં કે તમે ઘરે ગયા'તા, તો શું થયું-રાજી કરીને આયા? કાંઈ નહીં. ટપાલની સેવામાં હતો, એ જ સેવામાં હું રૂટીનમાં લાગી ગયો. **એક જણને ભગવાનને માર્ગે ચાલવામાં અંતર્યામીપણે કાકાજીએ જે પરિશ્રમ કર્યો છે, એનો આ મારો વ્યક્તિગત અનુભવ મેં કીધો. કાકાજી આખી જવાબદારી પોતાને માથે લઈ લે અને ખૂબ ખાત્રીથી કામ કરે.** એ કહેતા – રાજા! ધાર્યું કોનું થાય છે? – મૈં કિસકી ઘરવાલી હૂં! મારો ધણી કોણ છે, મારો ગુરુ કોણ છે! એ જે કેફ એમના જીવનમાં હતો – એ એક આદર્શ નેતાગિરી એમણે દરેક કાર્ય વખતે પૂરી પાડી.

૧૯૬૬નો યોગીબાપાના પ્રાકટ્ય દિનનો સમૈયો જે અહીં ઉજવાયો, એ પણ દાદુકાકાએ સુંદર રીતે જસુભાઈ સાહેબને સાથે રાખીને ઉજવ્યો. એ આપણા માટે–આપણા અનુપમ મિશન માટે શુભ શરૂઆતના મંગળ દિવસો હતાં.

બાપાએ કાકાજી સાથેનો સંબંધ કરી આપ્યો અને આજે સવારે મેં કહ્યું'તુ એમ બાપા ને કાકા

આપણી અધ્યાત્મ યાત્રામાં સદાય આપણી આગળ રહ્યા, આપણી સાથે રહ્યા અને જ્યાં આપણે પડ્યા-ખડ્યા ત્યાં એમણે આપણને ઊભા કરીને, ફરી પાછા એ માર્ગે પ્રેમપૂર્વક ચલાવ્યા. આ આપણો તપોભૂમિ બ્રહ્મજ્યોતિનો ઇતિહાસ છે.

શાંતિદાદાએ કીર્તન સંભળાવતા જે **'સુહૃદભાવ'**નો અછડતો ઉલ્લેખ કર્યો, એ **'ભિન્ન અંગવાળા સાથે મૈત્રી'** કરવાની વાત **કાકાજી** કહેતા. આપણને જેની સાથે ફાવે છે, મેળ છે એની સાથે તો મૈત્રી કરી છે, પણ **સાહેબદાદા**એ આ લૉકડાઉનના સમયમાં આપણને એક વાત કરી'તી – **ઊભું કર્યું પ્રારબ્ધકર્મ ધોવા માટે આપણને આ સમય મળ્યો છે.** ક્રિયમાણ પ્રારબ્ધકર્મ ધોવા માટેનો આ સમય આપ્યો છે. **આપણા સાથીદારો સાથે, આપણને ગમતા-અણગમતા, આપણાથી કામ કરવાની રીત ભલે જુદી હોય, આપણાથી એની જીવન પદ્ધતિ જુદી હોય, પણ એ આપણો સાથીદાર છે અને આપણે એની સાથે સુહૃદ બનવાનું છે.**

દાદુકાકાએ વિરોધ પ્રકૃતિવાળા લોકો જોડે કામ કર્યું છે... રતિકાકાએ કહ્યું કે **કાકા કલાક-કલાકની ધુન કરાવે. કાકા બબ્બે–ત્રણ-ત્રણ કલાકની કથા કરે** અને **સાંભળનારા બધાં ઊંઘતા હોય ! કાકાની ધીરજ કેટલી ?**

કાકાજીની ધીરજની કસોટીની સાહેબદાદાએ હમણાં સ્મૃતિ કરાવેલી કે દાસને સભામાં પાછળ ઊભા રાખેલા. એમને મરચાં ખવડાવેલા અને તોય દાસ ઝોંકુ મારે. દાસ અને માયાબાપાને કાકાએ ધક્કા ડિપાર્ટમેન્ટનું કામ આપેલું. કાકાજી કંઈ સંદેશો દાસને મોકલે, એટલે દાસ આણંદથી અને માયાબાપા નડિયાદથી જસુભાઈ સાહેબને સંદેશો આપવા માટે આવે...

બહુ ઊંડી ને આધ્યાત્મિક વાતની સાથે એક રમૂજની વાત કરીએ. કેવા અક્ષરમુક્તો ! જસુભાઈ સાહેબને સંદેશો આપવા માટે દાસ અને માયાબાપા બન્ને પોસ્ટ ગ્રેજ્યુએટ કેમેસ્ટ્રી ડિપાર્ટમેન્ટમાં આવ્યા. ત્યારે સાહેબ એમ.એસ.સી.માં ભણતા'તા અને આર.ડી. પટેલ સાહેબ એવા કડક કે પીરિયડ ચાલુ થાય, પછી ક્લાસમાં ચકલું ય ફરકે નહીં. બન્ને કેમેસ્ટ્રી ડિપાર્ટમેન્ટમાં દાખલ થયા. કોઈ મળે તો પૂછે ને જસભાઈ ભગત ક્યાં મળશે ? પણ કોઈ માણસ મળે નહીં. પ્હેલો ક્લાસરૂમ હતો, એનું બારણું ઠેલ્યું અને સામેની બેંચ ઊપર રતિકાકાને બેઠેલા જોયા. લૅક્ચર ચાલુ અને દાસે અને માયાબાપાએ ક્લાસરૂમમાં દંડવત્ કરવા મંડ્યા. આપણને હંસવું આવે છે. પણ **કાકાજીનું સેવન કરેલા આ ભક્તોને કેટલું બધું માહાત્મ્ય !** લૅક્ચર થિયેટરમાં પ્રોફેસર હતા ડૉ. આર.ડી. પટેલ અને એમનો ક્લાસ હતો. એ તો સ્તબ્ધ થઈ ગયા કે આ શું થયું ? રતિકાકા હં-હં કરતા બેંચ ઊપરથી ઊભા થઈ ગયા.

વિચાર કરીએ કે જેના સેવકો આવા માહાત્મ્યસભર, એ સ્વરૂપે માહાત્મ્યનું કેટલું સિંચન કર્યું હશે.

મને જણાવતા આનંદ થાય છે કે બન્ને પરિવારના બે સંતાનો **સુરેશભાઈ કાછિયા** અને **સુનીલભાઈ પંડ્યા** આજે વ્રતધારી સાધુ તરીકે આપણી સેવામાં જોડાયેલા છે. દાસની બીડી કેટલી ચાલુ રહેલી એ

પ્રસંગ પણ આપણને સાહેબદાદાએ કહ્યો છે. 'બીડી નહીં, પણ સંસાર એમનો છૂટી ગયો'—આ શબ્દોનો પ્રયોગ સાહેબદાદા કરે છે.

કાકાજીની પ્રસન્નતાના આવા પાત્રોનો હાથ સાહેબદાદાએ પકડી રાખ્યો.

દ્દથી આપણા આખા સત્સંગનો ઇતિહાસ જોશો, તો ગુરુહરિ સાહેબદાદાએ કાકાજીનો સિદ્ધાંત, કાકાજીની જે રુચિ, કાકાજીની જે કાર્યશૈલી એને નજરસમક્ષ રાખીને કાકાજીને યોગીજી મહારાજનું સ્વરૂપ માનીને સેવ્યા. પપ્પાજીને યોગીજી મહારાજનું સ્વરૂપ માનીને સેવ્યા. એવા યોગીબાપાના સંબંધવાળા તાડદેવના સંબંધવાળા ગૃહસ્થ હરિભક્તો, જેમના સંતાનો આપણે ત્યાં સાધક તરીકે આવ્યા, એ માવતરને પણ અંતિમ શ્વાસ સુધી સાહેબદાદાએ જતન કરીને જાળવ્યા છે. આ મારો-તમારો આપણા સહુનો પ્રત્યક્ષ અનુભવ છે. આ વાત છે આપણને મળેલી વારસાની. **એમને અનુકૂળ થયા કે ન થયા, એમને માનતા'તા કે ન્હોતા માનતા—એ જીવનમુક્તોનો સાહેબદાદાએ માત્ર ને માત્ર ભગવાનનો સંબંધ જોઈને એમનું જતન કર્યું ને ભગવાન સાથે જોડી રાખ્યા.** 'એમની સેવા કરવી એ જ આપણી ભક્તિ' એવી ભાવનાથી, એમના અંતિમ શ્વાસ સુધી મને, તમને, આપણને સહુને પણ લગાડયા—એ આપણો અનુભવ છે.

એમાં ભિન્ન અંગવાળા સાથેની મૈત્રીનો છેલ્લો મુકામ—ભેળા રહીને મહિમા સમજવો—એ કૂદી જવાનો છે. જેને પાંચમી ઘાંટી કહીએ છીએ—**એની ખામીઓ નહીં, પણ ખૂબીઓ જોઈને પોતા સાથે જોડી લઈને ભગવાનના કામમાં જોડી રાખવાનો આ અદ્‌ભુત ગુણ સાહેબમાં દેખાય છે.**

અમે બધાં 'એકતા એ જ એકાંતિકપણું' સૂત્ર સમજીને કંઈ સાથે નથી રહ્યા; મોટપ સાહેબદાદાની છે કે એમણે અમને સહુને આ સૂત્ર સાથે જોડી રાખ્યા. સહુની ખામીઓ એ જાણે છે, એમણે જોઈ છે, અનુભવી છે. પણ સહુની પાસેથી જે પ્રકારનું કામ લઈ શકાય, એ પ્રકારનું કામ લઈને ભગવાનનું કામ વધારે સારી રીતે આગળ વધે, એ જ માત્ર એક નિશાન રાખ્યું છે.

જે વૃત્તિ અને પ્રવૃત્તિ કાકાશ્રીની હતી, એવી જ વૃત્તિ અને પ્રવૃત્તિ સાથે ગુરુહરિ સાહેબદાદાએ આપણને જોડયા છે. છતાં, હમણાં જેમ કહ્યું તેમ એમણે એમના નામનું કાંઈ કર્યું નથી, પણ **બધું જ યોગીનું છે એવા ભાવથી જે જેના હેતવાળા હતાં, ત્યાં તેનો મહિમા ગાઈને એની પુષ્ટિ કરીને એનું સંવર્ધન કર્યું છે.** આ આપણા સહુનો અનુભવ છે. આવી **'ભાવાત્મક એકતા'ની વાત પણ દાદુકાકા કરતાં** કે ભલે ઘટકો તરીકે આપણે જુદા-જુદા હોઈએ; સંસ્થા-સંચાલનની પદ્ધતિઓ અને આશ્રમ વ્યવસ્થા ભલે અલગ-અલગ હોય, પણ આપણે સહુ યોગીના, આપણે સહુ ગુણાતીત સમાજના અને આપણે સહુએ ગુણાતીત અસ્મિતા ધારણ કરીને એનું વહન કરતા રહેવું છે—આ વાત પણ દાદુકાકા વારે વારે ટકોર કરીને કહેતાં.

કાકાજીની દૃષ્ટિ હમેશા આ સિદ્ધાંત તરફ હતી અને સિદ્ધાંત હમેશા સત્ય હોય ને સનાતન હોય. સંજોગો બદલાય, પરિસ્થિતિ બદલાય, માણસો બદલાય, પણ એને લીધે સિદ્ધાંત ન બદલાય. સિદ્ધાંત સ્થાપનના

કાર્ય માટે, એ સંજોગો ને એ પરિસ્થિતિ, એ માણસોને સાનુકૂળ-અનુકૂળ કરે ને એમની શક્તિઓનો સદ્ઉપયોગ થાય, એ ખરી કુશળતા છે. **એવી નેતાગિરીની સફળતા એ સાહેબદાદાનું જીવન છે.** આપણે એમ કહીએ છીએ કે **પોલું હોય તે તો સહુ કોઈ વગાડે, પણ સાંબેલું વગાડે ત્યારે ખરું. સાંબેલું વગાડવાની અદ્ભુત ક્રિયા ! પ્રભુની શક્તિ વગર એ શક્ય બનતું નથી. કોઈ સાંબેલું વગાડે, તો આપણે એટલું તો માનીએ કે એનામાં પ્રભુની શક્તિ કામ કરી રહી છે.**

અમે બધાં જાડી બુદ્ધિવાળા. સાંબેલું હંમેશા બૂઠ્ઠુ હોય, અણીદાર ન હોય, ધારદાર ન હોય. એવા અમે બુઠ્ઠા, અક્કલના બુઠ્ઠા, સાંબેલા જેવા. **અમને ભગવાનની સેવામાં જોડ્યા,** એ એમની કુશળતા છે. **એ એમના દ્વારા પ્રભુની શક્તિ કામ કરી રહી છે, એનું દર્શન છે. એવું દર્શન દાદુકાકાએ કરાવ્યું.** એની સ્મૃતિઓ આવા પ્રસંગે તાજી થાય છે.

વર્તમાન કાળે ગુરુહરિ સાહેબદાદા પણ એ જ બ્રાહ્મીશક્તિને ધારણ કરીને એવી જ શક્તિઓ વાપરીને આપણને સહુને ભગવાનની સેવામાં જોડી રહ્યા છે. આવા પુરૂષો સદાય અમર છે, સદાય જીવંત છે, સદાય આપણી સાથે છે. એમની હૂંફ, પ્રેમ અને પ્રેરણા, એની કૃપા સદાય આપણા ઊપર વરસે છે.

આપણે—તપોભૂમિ બ્રહ્મજ્યોતિમાં નિવાસ કરનારાં વિશેષ ભાગ્યશાળી છીએ કે બાપાએ અને કાકાએ આ ભૂમિને તીર્થત્વ આપ્યું અને સાહેબદાદાએ પોતાના તપોબળથી એ તીર્થત્વનું સંવર્ધન કર્યું છે. એવી તીર્થભૂમિના નિવાસી આપણે સહુ સાચા અર્થમાં તીર્થવાસી થઈને રહીએ.

તીર્થવાસી થવું ઘણું અઘરૂં છે. આચાર્ય મહારાજ રઘુવીરપ્રસાદજીને ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ જૂનાગઢ આવીને સમાગમ કરવાનો જ્યારે આદેશ કર્યો'તો, ત્યારે કહ્યુ'તું કે **'તીર્થવાસી'** થઈને આવો, તો તમારી સર્વ ગ્રંથિઓને ઓગાળી દઈશ. એ **ગુણાતીત સત્તા હતી, ગુણાતીત જ્ઞાન** હતું અને ત્યારે રઘુવીરજી મહારાજ પોતાના આચાર્યપણાંનું માન, સમ્માન, હોદ્દો અને એની જહાં-જહાં બધું મૂકી દઈને માત્ર સેવક બની, તીર્થવાસી થઈને જૂનાગઢ જઈને રહ્યા'તા. ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ પણ એમના હૃદયને વિષે મહારાજની સર્વોપરિ નિષ્ઠા સ્થાપી દીધી.

આ **'તીર્થવાસી'** શબ્દ આપણા સંપ્રદાયમાં વપરાય છે. એવી તીર્થભૂમિના આપણે નિવાસી. આપણે તીર્થવાસી બનવાનો પ્રયત્ન કરીએ. **જ્યારે આપણે તીર્થવાસી બનીએ, ત્યારે આ તીર્થને તીર્થત્વ આપનારા પ્રગટ સત્પુરૂષ સાથેનું આપણું જોડાણ યથાર્થ બને છે.** ગુરુના ગુણ તો ત્યારે આવે જ્યારે અંતરાય ટળે અને સર્વજ્ઞ જાણે. ત્યારે ગુણાતીતાનંદસ્વામીની વાત સાકાર થાય છે.

એવા ગુરુહરિ સાહેબદાદા આપણા જેવા થઈ, આપણી સાથે, આપણી વચ્ચે રહે છે, રમે છે, જમે છે, આનંદ કરાવે છે. આજે રસ-રોટલીનુ જમણ... પોતે સામેથી કીધું કે હું પણ યોગીપ્રસાદમાં આવું છું અને હું પણ બધાંની સાથે પ્રસાદ લઈશ. પોતે આવીને જમ્યા અને કેવી ગમ્મત કરાવી કે આગ્રહ કરજો—એમ કરીને તાળી પણ અપાવી. એમને એ ભોજનમાં શું રસ ? એમને આપણામાં રસ. એ આપણને સંબંધ આપવા

માંગે છે. આપણને ભગવાન સાથે જોડવા માંગે છે. એમનો એ દાખડો સફળ થાય, એવી ગુરુભક્તિ આપણે અદા કરી શકીએ, એ સાચી આ પ્રસંગોની ઉજવણી ને સ્મૃતિ છે.

કાકાજી, પપ્પાજી, સોનાબા, શાંતાબેન એમના સમયમાં આવું જીવી ગયા, જેને આપણે આપણા **'આદર્શ પ્રભુસ્વરૂપો'** તરીકે માનીએ છીએ, પૂજીએ છીએ, એમની મૂર્તિઓ પધરાવી છે અને પ્રસંગે-પ્રસંગે એમની સ્મૃતિ કરીએ છીએ. પણ **એ જ જીવંત મૂર્તિ—પ.પૂ. સાહેબજી જે આપણી વચ્ચે વિચરે છે, એના વિષે સમ્યક્ દિવ્યભાવ અને એના સંબંધવાળા ભક્તો વિષે સમ્યક્ નિર્દોષબુદ્ધિ થાય, એ જ આપણી એક માત્ર સાધના છે.** એના તરફ સતત જાગ્રત રહીને આપણને જીવવાનું એ બળ પ્રેરી રહ્યા છે.

સાહેબદાદાએ બીજો ઉપાસનાનો સિદ્ધાંત પણ મંગળપ્રભાતની સભામાં કહ્યો'તો.

ગુરુ ગોવિંદ દોનું ખડે કિસકો લાગું પાય, બલિહારી ગુરુદેવ કી, જિસને ગોવિંદ દિયો દિખાય.

આજે સવારે સમાધિ ઉપર વાત કરી'તી કે મોટા પુરૂષોનો આપણે કેમ ઉપકાર માનવાનો ?

પછી સાહેબદાદાએ એમ કહ્યું કે પહેલાં ગુરુને પગે લાગવાનું. કારણ કે પ્રભુની ઓળખાણ ગુરુએ આપણને કરાવી અને એમણે આપણને પ્રભુ સાથે જોડયા. વિશેષતા છે, પોતા સાથે નહીં, પ્રભુ સાથે જોડયા અને પછી એમ ચોખવટ કરી કે પ્હેલાં ગુરુને પગે લાગશું ને પછી પ્રભુને પગે લાગશું તો પ્રભુને ખોટું નહીં લાગે. આમ આપણા મનની કંઈ આપણી માન્યતાઓ કે અણસમજણ હોય, એનું નિરાકરણ કરતાં આ કીધું.

દાદુકાકાની મોટપ એ છે કે એમણે આપણને યોગીજી મહારાજને ઓળખાવ્યા. આપણે ઘણી વખત ૩જી ફેબ્રુઆરીના મહિમાની વાતો કરીએ છીએ, ૭મી માર્ચે આપણે બ્રહ્મસમાધિની વાતો કરીએ છીએ. **આપણા ગુણાતીત સમાજના ગુરુસ્થાને દાદુકાકા છે. એમણે આપણને પ્રભુ ઓળખાવ્યા, પ્રગટ પ્રભુ ઓળખાવ્યા, પ્રગટનો સિદ્ધાંત સમજાવ્યો. પ્રગટની રુચિ અને અભિપ્રાયમાં જીવવાનો એકડો ઘૂંટાવ્યો અને...** વિશેષ કરીને વ્રતધારી સાધકો માટે—તપોભૂમિ **બ્રહ્મજ્યોતિ પર નિવાસ કરતાં સર્વ મુક્તો માટે દાદુકાકાનો બીજો બહુ મોટો ઉપકાર એ કે એમણે આપણને પ.પૂ. સાહેબદાદાનો મહિમા સમજાવ્યો.**

વિદ્યાર્થી અવસ્થામાં મેં સાહેબ સાથે અભ્યાસ કર્યો, છાત્રાલય બાંધકામમાં સાથે કામ કર્યાં. યોગીજી મહારાજની આજ્ઞા પ્રમાણે સમૈયા કર્યાં, સેવાઓ કરી. એ દરમ્યાન, **'જસુભાઈ કંઈ જુદુ તત્ત્વ છે'—એ વાત કાકાશ્રીએ ૬૬ની સાલ સુધી અમને સહુને ઘૂંટાવી.**

માત્ર સાહેબની નહીં, જ્યાં હરિપ્રસાદસ્વામીનું મંડળ હોય, જ્યાં મુકુંદસ્વામીનું મંડળ હોય કે જ્યાં જ્યાં જે જે સદ્ગુરુનું મંડળ હોય, ત્યાં જઈ એમના સદ્ગુરુની ઓળખાણ, એમના માહાત્મ્યનો વધારો દાદુકાકાએ કરી આપ્યો અને એનામાં જોડાઈને એના થઈને જીવવાની વાતનો એકડો માંડી આપ્યો. દાદુકાકાનું આ આપણા ઊપર બહુ મોટું ઋણ-ઉપકાર છે. એ રીતે આપણે એમને સતત સંભારીએ કે તમે અમને બાપા સાથેનો મેળ કરાવી આપ્યો, તમે અમને સાહેબ સાથેનો મેળ

કરાવી આપ્યો અને એને કારણે સમગ્ર ગુણાતીત સમાજના સહુ સંતો, મુક્તો, ભક્તોની સાથે પણ સુમેળ કરાવીને **'એકતા એ જ એકાંતિકપણું'** સૂત્ર આપ્યું. **આવા પ્રેમ અને આત્મીયતાની ગંગોત્રી દાદુકાકાએ 'તાડદેવથી' આખા ગુણાતીત સમાજમાં વહેવડાવી.** એનું કીર્તન પણ સંતોએ આજે ગાયું કે તાડદેવને તખત બનાવી એ સદાય સાકાર પ્રગટ રહ્યા.

આ **ગુણાતીતભાવને આપણને સહુએ પામવાનું છે અને ગુણાતીતભાવનાને આપણે સહુએ ધારણ કરીને જીવંત રાખવાની છે. એ સાચી પ્રગટની ઉપાસના છે.** ગુરુ ગુણાતીતને સાથે લઈને સ્વામિનારાયણ ભગવાન પોતે આવ્યા. એટલે આપણે ભગવાન અને સંતની વાતને સમજતા થયા. ગુણાતીત સમાજના ત્યાગી સંતો, વ્રતધારી યુવકો, સંન્યાસી બ્હેનો કે ગૃહસ્થ મુક્તો—ચાર પાંખડીઓમાંના જે આશ્રમમાં જીવન જીવતા હોઈએ, સહુ પોતપોતાના આશ્રમને, પોતાના સ્વધર્મમાં રહીને દીપાવે.

આ ગુણાતીત સમાજના પ્રતીક માટે આપણે ધ્વજ પણ બનાવ્યો અને જ્યારે કોઈ પણ પ્રસંગ હોય, ત્યારે એ ધ્વજ આપણે ફરકાવીએ છીએ. કાકાજી, પપ્પાજી, હરિપ્રસાદસ્વામીજી અને સાહેબદાદાની મંગળ હાજરીમાં આપણે આમ્રવૃક્ષ હેઠળ બ્રહ્મજ્યોતિનો પાયો નાખીને **ગુણાતીત સમાજનો આ ધ્વજ** લહેરાવેલો. એ અદ્ભુત સ્મૃતિઓ આપણી સહુની સાથે—આ તપોભૂમિ સાથે જોડાએલી છે. એ ગરિમા, એનું ગૌરવ, એની પવિત્રતા સચવાઈ રહે અને એનું સંવર્ધન થાય એની સામૂહિક જવાબદારી આપણા સહુની છે. એને સાથે મળીને નભાવીએ. પ્રભુના કાર્યમાં સહુ મન પરોવીને જોડાઈએ અને ગુરુની પ્રસન્નતાનું પાત્ર બનીએ, એવી પ્રાર્થના કરવાનો પણ આજે મંગળ અવસર છે.

ગુરુહરિ સાહેબદાદા આપણા સહુની ઉપર આવી મંગળ કૃપા વરસાવે. જે ગૃહસ્થો પાયામાંથી આપણી સાથે જોડાયા, જેમણે પોતાનું ધન, ધામ, કુટુંબ, પરિવાર સમગ્ર અર્પણ કર્યું, સંતોએ પણ જે રીતે પોતાનું જીવન અર્પણ કર્યું, ને મન અર્પણ કરવાની જે સાધના થઈ રહી છે—એ બધી વાતો ધીરે-ધીરે, પ્રસંગે-પ્રસંગે આપણને સમજાતી જાય છે. સમય ઝડપથી વહી રહ્યો છે. **હવેની જીવન પદ્ધતિ પણ બદલાવાની છે. એ બદલાવની સાથે પણ આપણે આ જીવનમૂલ્યો જાળવી રાખીને બદલાતા જઈએ.**

સાહેબદાદાએ એક માર્મિક સૂચન કર્યું'તો મારી અંદર બદલાવ પણ આવે. નવું મંદિર બન્યું અને નૂતન મૂર્તિઓની આમાં સ્થાપના થઈ, તો એ પ્રમાણે આપણી અંદર પણ નૂતન મંદિર બને, પ્રભુની મૂર્તિ સ્થાપિત થાય. આવો અદ્ભુત મોકો સાહેબે આ લૉકડાઉનના સમયમાં તો આપ્યો, પણ લૉકડાઉન ખુલ્લું થશે ત્યારે પણ આપણે આ જ વાતને ધારણ કરીને-રાખીને જીવવાનું છે. **જીવન તો જીવાતું રહેશે, પણ જે જીવ્યા એને જ જીવન કહેવાય.** આપણે આમ હાથ-પગ ઝાલીને ક્યાં સુધી બેસી રહેવાના છીએ ? જે નિયમો છે એનું પાલન કરીને જે કંઈ પણ કરવાનું છે, તે કરી પ્રભુ પ્રીતિ અર્થે જીવવાનો દૃઢ સંકલ્પ કરીએ અને જીવનમુક્ત થઈને આપણે જીવનને કૃતાર્થ કરીએ. એના માટે પ્રભુ અદ્ભુત શક્તિ ને ભક્તિ આપે, એવી મંગળ પ્રાર્થના. સર્વને આ મંગળ પર્વના ભાવભર્યા જય શ્રી સ્વામિનારાયણ!

(સંક્ષિપ્ત : ધ્વનિપ્રસારણમાંથી ઉદ્ધૃત)

[हिन्दी अनुवाद]

प.पू.अश्विनभाई (ब्रह्मज्योति)

प.पू. रतिभाई और प.पू. शांतिदादा ने अद्‌भुत आशीर्वाद बरसाये। हम सभी की ओर से प.पू. साहेब दादा के श्रीचरणों में उन्होंने प्रार्थना की। हमारी पीढ़ी के साधक खूब भाग्यशाली कहे जाएँ कि काकाजी-पप्पाजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति जो भक्ति अदा की, उसे देखने और जानने का अद्‌भुत मौका मिला।

काकाजी एक आध्यात्मिक पुरुष! दूसरी ओर ही वॉज़ ए बेस्ट लीडर। हम उन्हें **'गुणातीत समाज के स्थापक'** कहते और मानते हैं। हमारे **'गुरुहरि'** कहते हैं। काकाजी के द्वारा दो मंत्र सुने थे: उन्होंने रतिकाका को मंत्र दिया – **'एकता वही एकांतिकभाव!'** हमने उनसे अकसर सुना है – **'भिन्न प्रकृति वालों के साथ मैत्री करो!'**

और जब... हमारे अलग-अलग केन्द्र अस्तित्व में आये – सोखड़ा, सांकरदा, ज्योत, अनुपम मिशन, दिल्ली, समढ़ियाला – तब दादुकाका **'भावात्मक एकता'** शब्द का प्रयोग करते थे। तब यह सुनना बहुत अच्छा लगता था। कितना समझे, जीवन में कितना एहसास करा – वह तो वे जानें या आत्मराम जोगी जाने। लेकिन, **बड़े सत्पुरुषों का संकल्प और गुरुहरि साहेबदादा** के जीवन ने इन बातों को हमारे-अपने आचरण में लाकर बताया। रतिकाका ने जिस प्रेस कॉनफरन्स की बात करी, उस संपूर्ण प्रसंग को काकाजी ने एक नेता की भाँति स्वयं संभाला था। उस समय ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का प्राकट्य दिन मनाने वाले थे और गुणातीत ज्योत की स्थापना होनी थी। सारे प्रसंग की समग्र जिम्मेदारी काकाजी ने अपने ऊपर ली थी। **मानो वन मॅन आर्मी की भाँति जीते-वर्तते, उनका दर्शन करने का सद्‌भाग्य हमें प्राप्त हुआ।**

नेतागिरी का एक बड़ा गुण यह है कि साथीदारों की कमियों को देखने के बजाय, वे जैसे भी हों – पर उनमें निहित खूबियों का उपयोग करके, उन्हें काम में लगाना और भगवान की सेवा में इस्तेमाल करना।

बापा को राज़ी करने की भावना से सभी कार्यों में अपना संपूर्ण तंत्र एक नेता की भाँति याहोम करके दादुकाका ने काम किया। मानो सभी कार्य उनके अपने हैं, इस प्रकार वे करते। खुद को साथीदारों की ढाल बनाया। अपने **एग्री ओरियन्ट के स्टाफ, अपनी सारी गाड़ियाँ, वाहन और ज्योति बहन व तारा बहन जैसी बहनों को भी वे ईडर लेकर गये।** यूँ उनका अपना जो कुछ था, वह उन्होंने उनके (नंदाजी) काम में लगा दिया। साबरकांठा प्रदेश से काकाजी का कोई प्राथमिक परिचय नहीं था। इलेक्शन से उनका कोई लेना-देना नहीं था। लेकिन, एक मात्र योगीजी महाराज की आज्ञा और शास्त्रीजी महाराज का संबंध देख कर (नंदाजी के) इलेक्शन में खड़े रहे, इस तरह उन्होंने प्रचार का मोर्चा संभाल लिया था। फलस्वरूप योगीबापा ने गोंडल में काकाजी को भगवान का साक्षात् दर्शन कराया।

51 शिक्षित युवाओं को दीक्षा देने का बापा का संकल्प–इस प्रसंग में भी **दादुकाका** ने सबसे पहले

अपने परिवार व प्रियजनों को बापा के संकल्प में याहोम किया। **'बापा के लिए जीवन न्यौच्छावर कर लेने जैसा है'**– ऐसे माहात्मय का सिंचन किया और जिनके मार्ग में कौटुंबिक विरोध हुए, उनकी ढाल बन कर काकाजी खड़े रहे। ऐसी गंभीर समस्याओं की फरियाद योगीजी महाराज तक पहुँचने ही नहीं दी, अपने सिर पर सब ले लिया। लोगों की गालियाँ सुनीं, अपयश पाया। लेकिन, उनका यही लक्ष्य था कि एक युवक को साधु बनाने से **'योगीबापा राज़ी होते हैं'**, तो बापा का वह संकल्प पूरा करना है।

गुरुहरि साहेब दादा का वर्तमान जीवन देखें और वे जिस प्रकार हमारा मार्गदर्शन करके जीना सीखा रहे हैं, तो इस क्वॉलिटी का हमें साहेब दादा में दर्शन होता है। अपने व्यक्तिगत अनुभव से कहूँ तो **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र थे। उनकी मातुश्री काशीबा उन्हें साधु बनने की मंज़ूरी दें, उसके लिए भी दादुकाका ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की और हरिप्रसादस्वामीजी को साधु होने के लिए मंज़ूरी दिलवाई। विद्यानगर के युवक मंडल के सदस्य के तौर पर हमने यह सब देखा है–अनुभव किया है। हरिप्रसादस्वामीजी को साधु बनाने के बाद मुझे बापा के पास पत्रलेखन की सेवा में जाने का मौका मिला, जो मेरी मातुश्री को पसंद नहीं था। सो, उन्होंने मेरे बड़े भाई को मुझे वापिस लाने के लिए भेजा। तब मैं दादर मंदिर में बापा के पास था। रात की ट्रेन पकड़ कर सुबह के समय भाई मुंबई आ गये और आते ही योगीजी महाराज से मिले। बापा से उनकी पहली मुलाकात थी, कोई परिचय नहीं था और वे बापा के समक्ष रोते हुए बोले- मेरा भाई घर से भाग कर यहाँ साधु बनने के लिए आया है। बापा ने पूछा कौन? क्या? कहाँ से आया? क्या हुआ?

फिर मुझे बुला कर कहा – तुम्हारा भाई आया है। मैंने बापा से कहा – मुझे नहीं जाना है। बापा बोले– भाई को राज़ी कर लोगे, तो भगवान राज़ी हो जाएँगे। मुंबई से गुजरात जाने की ट्रेन रात को निकलती थी। सो, सारा दिन वे दादर मंदिर में ही रहे। भाई को भोजन कराया और **निकलते समय योगीजी महाराज ने मुझसे कहा – ताड़देव होकर जाना।** छात्रालय के निमित्त मुझे काकाजी का परिचय था। फिर हरिप्रसादस्वामीजी को दीक्षा दी, तब भी काकाजी से परिचय हुआ था। सो, हम ताड़देव गये। वहाँ जाकर खड़े रहे। भोजन का समय था, बॉम्बे सॅन्ट्रल से रात की ट्रेन पकड़नी थी। सोनाबा वहीं मौजूद थीं, उन्होंने भोजन करने बिठा दिया और तब मैंने दादुकाका को अपनी 'रामकहानी' बताई कि मेरा भाई बापा के पास रोने लगा और बापा ने तो मुझसे कहा – भाई के साथ जाओ और उसे राज़ी कर लो। काकाजी ने कहा – राजा, क्यों घबराते हो? एक सप्ताह के बाद मैं आ रहा हूँ और हम साथ लौटेंगे। जिन संतों को दीक्षा दी थी, उनमें से कइओं के प्रकरण ऐसे थे।

आज सुबह हमने प.पू. अरुणभाई के विषय में सुना। **एक-एक मुक्त, जो भगवान का होकर जीने निकले, उसकी शत-प्रतिशत जिम्मेदारी काकाजी ले लेते। इस प्रकार सभी के चाहे फिर वो कौटुंबिक प्रश्न हो, उसकी जिम्मेदारी वे लेते और रक्षा का छत्र स्वयं लेकर, भक्तों के आगे रक्षा की ढाल बनते – यह हमने अनुभव किया है।**

आप सभी जानते हैं, उसके मुताबिक काकाजी सोखड़ा आए। उस समय गुणातीत ज्योत स्थापित करने की तैयारियाँ चल रही थी। बहनें जब विद्यानगर आयेंगी, तब उन्हें गद्दे चाहिये होंगे, तो गद्दों के लिए रूई लेकर, उसे

पिंजवा कर गद्दे भरवाने का काम चंदुभाई दाजी को सौंपने के लिए काकाजी सोखड़ा आये थे। मैंने घर पर बात करी कि हमारे गुरुजी – काकाजी गुजरात आए हैं और मेरी इच्छा है कि हमारे घर उनकी पधरामणी करायें और यदि संभव हो, तो उनके लिए प्रसाद की भी व्यवस्था की जाये। मुझसे लगाव के कारण मेरी मातुश्री ने 'हाँ' कर दी – ठीक है, ले आना तेरे काका को। उन्होंने पुरणपोळी की बढ़िया रसोई बनाई। काकाजी भोजन करने बैठे, तब मैं, काकाजी और मेरी मातुश्री थे। बड़ा और छोटा भाई घर पर नहीं थे। मेरे बारे जो भी शिकायत थी, वह मेरी बा काकाजी से करती जा रही थीं और काकाजी एक के बाद एक पुरणपोळी खाते जा रहे थे। बा गरम-गरम पुरणपोळी, घी चुपड़ कर परोसती जा रही थीं और काकाजी ने एक खाई, दो खाई, तीन खाई, चार खाई और इस दौरान बा ने मेरे प्रति की पूरी भड़ास निकाली। काकाजी ठंडे कलेजे से एक के बाद एक रोटी ग्रहण कर रहे थे... आप विचार करो, **कोई व्यक्ति आपके सामने इतना अधिक बोले, फिर भी आप भर पेट खाना खा सको, वो काकाजी की आध्यात्मिक अवस्था कैसी होगी! कितनी समता, स्थिरता होगी और भगवान को कैसा कर्ता-हर्ता माना होगा।** योगीजी महाराज के लिए इस लड़के को साधु बनाना है, तो उसके लिए जो कुछ भी सुनना पड़े, सब वसूल है! इससे अधिक आनंद की क्या बात हो सकती है? काकाजी के हृदय में जो भी भाव होगा... काकाजी ने अच्छी तरह भोजन किया और मेरी बा भी शांत हुईं।

हम कहां तक बोलते रहेंगे? कोई इतना बोलता रहे और सामने वाला कुछ बोले नहीं, पर भोजन ही करता रहे, तो उस संवाद में कहाँ मज़ा भी आता है?

भोजन के बाद काकाजी ने मुझसे कहा – मैं विद्यानगर जा रहा हूँ। तुम कल विद्यानगर आना, हम आणंद से रात को मुंबई वापिस चलेंगे। काकाजी को कितना विश्वास होगा कि जिसे घर से मंज़ूरी नहीं मिली थी और मंज़ूरी लेने के लिए जिसे योगीबापा ने खुद वापिस भेजा था, तब भी मुझे ऐसी सूचना दी।

काकाजी के जाने के बाद मैंने बा से बात करी – आप हाँ कहो या ना, पर मैं साधु बनूंगा। यदि 'हाँ' कहोगे, तो मेरे पुण्य के भागीदार बनोगे, यदि 'ना' कहोगे तब भी मैं आपके किसी काम तो नहीं आने वाला। एक सप्ताह मैं घर रहा, उस दौरान सभी ने मेरा वर्तन देख कर निर्णय ले लिया कि यह यहाँ रहे या न रहे, लेकिन हमारे किसी काम का नहीं है। सांसारिक काम में किसी काम आने वाला नहीं है। काकाजी के कारण मेरी बा ने मुझे राज़ी-खुशी से मंज़ूरी दे दी। मैं तो राह ही देख रहा था, सो पोटला उठा कर – पोटला जैसा कुछ था ही नहीं, तो जो कुछ भी थैली में था, वह लेकर विद्यानगर आया। विद्यानगर में सभी भाई छात्रालय में थे।

मुझे देख कर काकाजी बोले – आ गये राजा! **'राजा' उनका स्पेशल शब्द था।** किस प्रकार मैं आया, मेरे निकलने के बाद क्या हुआ–कुछ भी उन्होंने पूछा नहीं और उसी रात काकाजी के साथ ट्रेन में बैठ कर सीधा मुंबई पहुँचा! मैं दादर स्टेशन पर उतरा और काकाजी बॉम्बे सॅन्ट्रल। दादर मंदिर पहुँच कर बापा की सेवा में जुड़ गया। आश्चर्य की बात यह थी कि बापा ने एक भी सवाल नहीं पूछा कि तुम घर गये थे, वहाँ क्या हुआ – राज़ी करके आये? कुछ नहीं। पत्रलेखन की सेवा में था, तो रुटीन की वही सेवा में लग गया। **एक व्यक्ति को भगवान के मार्ग पर चलाने के लिए काकाजी ने अंतर्यामी रूप से जो परिश्रम किया है, उसका मेरा यह व्यक्तिगत**

अनुभव है। काकाजी सारी जिम्मेदारी स्वयं पर ले लेते और खूब विश्वासपूर्वक काम करते। वे कहते – राजा! किसकी मरज़ी से सब होता है?– मैं किसकी घरवाली हूँ! मेरा मालिक कौन है, मेरे गुरु कौन हैं! यह एक क़ैफ़ उनके जीवन में था। एक आदर्श नेता की भाँति उन्होंने सब कार्य संभाले।

1966 में योगीबापा के प्राकट्य दिन का उत्सव यहाँ (विद्यानगर) में मनाया गया था। दादुकाका ने जसुभाई साहेब को साथ लेकर वह बहुत अच्छी तरह मनाया। वे हमारे लिए – हमारे अनुपम मिशन की शुरुआत के मंगल दिन थे। **बापा ने काकाजी के साथ दृढ़ संबंध करवा दिया और आज सुबह ही मैं बात कर रहा था कि बापा और काकाजी हमारी आध्यात्म यात्रा में सदैव हमारे आगे रहे, हमारे साथ रहे और जहाँ हम लड़खड़ाए, वहाँ उन्होंने हमें फिर से खड़ा किया और प्रेमपूर्वक उसी मार्ग पर अग्रसर किया। हमारी तपोभूमि ब्रह्मज्योति का यह इतिहास है।**

शांतिदादा ने कीर्तन सुनाते हुए **'सुहृदभाव'** का जो ज़िकर किया, वो ही **'भिन्न प्रकृति वाले से मैत्री'** करने की बात काकाजी करते। हमें जिसके साथ जँचता है, जिसके साथ मेल-मिलाप है, उसके साथ तो मैत्री करी, लेकिन इस लॉकडाउन के दौरान **साहेबदादा** ने बात करी थी – हमारे **खड़े किये हुए प्रारब्ध-कर्म को धोने के लिए हमें यह समय मिला है।** क्रियमाण प्रारब्धकर्म धोने का हमें यह अवसर मिला है। **हमारा साथी-संगी, भले जंचता हो या ना जंचता हो, काम करने की हमारी रीति भले ही हमसे अलग हो, उनकी जीवन पद्धति हम से भले भिन्न हो, लेकिन वो हमारा साथीदार है और हमें उसका 'सुहृद' बनना है।**

दादुकाका ने विरोध प्रकृति वाले लोगों के साथ काम किया है...रतिकाका ने बताया कि **काकाजी घंटों तक धुन कराते थे। काकाजी 2-3 घंटे तक कथा करते थे, भले ही सुनने वाले सभी सो जायें! काकाजी को कितनी धीरज होगी?**

काकाजी की धीरज की कसौटी की स्मृति अभी साहेबदादा ने कराई कि दास (एक भक्त) को सभा में पीछे खड़ा रखा था। उन्हें मिर्च खिलाईं, तो भी वे नींद के झोंके लेते। दास और मायाबापा को काकाजी ने धक्का डिपार्टमेन्ट का काम सौंपा था। काकाजी दास को कुछ संदेश भेजते, तो दास आणंद से और मायाबापा नड़ियाद से जसुभाई साहेब को संदेश देने के लिए आते...

बहुत गहराई की और आध्यात्मिक बात के साथ आनंद की एक बात करता हूँ। कैसे अक्षरमुक्त थे! जसुभाई साहेब को संदेश देने के लिए दास और मायाबापा दोनों पोस्ट ग्रेज्युऐट केमिस्ट्री डिपार्टमेन्ट में आए। तब साहेब एम.एस.सी में पढ़ते थे और आर.डी पटेल साहब इतने सख़्त थे कि उनका पीरियड चालू होने के बाद क्लास में एक चिड़िया भी आ ना सके। दोनों केमेस्ट्री डिपार्टमेन्ट में दाख़िल हुए। कोई मिलता तो उससे पूछे न कि जसभाई भगत कहाँ मिलेंगे? लेकिन कोई व्यक्ति मिला ही नहीं। एक कक्ष का दरवाज़ा धकेला, तो सामने बेंच पर रतिकाका को बैठे देखा। लॅक्चर चल रहा था, पर दास और मायाबापा रतिकाका को देखते ही उन्हें दंडवत् करने लगे। हमें हँसी आती है, पर **काकाजी का सेवन करे हुए इन भक्तों को कितना माहात्म्य!** लॅक्चर थियेटर में प्रोफेसर

डॉ. आर.डी. पटेल थे और उनकी क्लास थी। वे तो स्तब्ध हो गये कि यह क्या हुआ? रतिकाका हं-हं करते हुए बैंच से खड़े हुए।

विचार करो जिनके सेवक इतने माहात्म्युक्त, तो उनके स्वरूप ने उनमें माहात्म्य का कितना सिंचन किया होगा।

मुझे बताते हुए आनंद हो रहा है कि दोनों परिवार की संतान **सुरेशभाई काछिया** और **सुनिलभाई पंडया** आज हमारे यहां व्रतधारी साधक के रूप में सेवा में जुड़े हुए हैं। दास को बीड़ी पीने की कितनी आदत थी, वह प्रसंग भी हमें साहेबदादा ने बताया है। 'बीड़ी नहीं, लेकिन दास का संसार छूट गया' – इन शब्दों का प्रयोग साहेबदादा करते हैं।

काकाजी की प्रसन्नता के ऐसे पात्रों का हाथ साहेबदादा ने थामे रखा।

1966 से अपने सत्संग का इतिहास देखें, तो गुरुहरि साहेबदादा ने काकाजी के सिद्धांत, उनकी रूचि व कार्यशैली को नज़र समक्ष रख कर काकाजी को योगीजी महाराज का स्वरूप मान कर उनका सेवन किया। पप्पाजी को योगीजी महाराज का स्वरूप मान कर सेवन किया।

योगी बापा और ताड़देव के संबंध वाले ऐसे गृहस्थ हरिभक्तों की संतान हमारे यहाँ साधक के रूप में रह रहे हैं। उन सभी के माता-पिता को भी अंतिम श्वास तक जतन करके, साहेबदादा संभाल रहे हैं। यह मेरा-तुम्हारा, हम सबका अनुभव है। यह बात हमें मिली विरासत की है। कोई अनुकूल हुआ हो या नहीं, साहेबदादा को मानता हो या नहीं मानता हो, पर उन्होंने केवल और केवल भगवान का संबंध देख कर इन जीवनमुक्तों का जतन किया और भगवान के साथ जोड़े रखा।

'उनकी सेवा करना ही हमारी भक्ति' ऐसी भावना से, उनके अंतिम श्वास तक मुझे, आपको, हम सबको भी लगाये रखा – यह हमारा अनुभव है।

साथ ही, भिन्न प्रकृति वालों से **'मैत्री'** जैसा अंतिम पड़ाव कि मुक्तों के साथ रह कर, उनकी महिमा समझ कर छलाँग लगानी है। इसे पाँचवी गुत्थी कहा जाता है। **भिन्न प्रकृति वालों की कमियाँ नहीं, बल्कि उनकी खूबियाँ देख कर, अपने साथ जोड़ कर भगवान के कार्य में जोड़े रखना है! यह अद्‌भुत गुण साहेब में दिखाई देता है।**

हम सब कोई 'एकता वही एकांतिकभाव' सूत्र समझ कर साथ नहीं रहे; बल्कि साहेबदादा का बड़प्पन है कि उन्होंने हम सबको इस सूत्र के साथ जोड़े रखा। वे हम सबकी कमियाँ जानते हैं, उन्होंने देखी और अनुभव भी करी हैं। पर, उनका मात्र एक निशान है कि सभी से जिस भी प्रकार की सेवा करवा सकें, उस प्रकार से करवा कर, भगवान का काम अच्छी तरह आगे बढ़ाना है।

जो वृत्ति और प्रवृत्ति काकाजी की थी, उसी वृत्ति और प्रवृत्ति के साथ गुरुहरि साहेब दादा ने हमें जोड़े रखा है। फिर भी, अभी जैसे कि बताया कि काकाजी ने अपना नाम कहीं ज़ाहिर नहीं होने दिया और **'सब कुछ योगी का है'–ऐसे भाव से जो जीव जिस स्वरूप से जुड़ा हुआ था, उसके पास उसी स्वरूप की महिमा गाकर, उसकी पुष्टि करके उसका संवर्धन किया है।** हम सबका यह अनुभव है। ऐसी

'भावात्मक एकता' की बात भी **काकाजी** करते थे कि भले ही हमारे केंद्र अलग-अलग हैं, संस्था संचालन की पद्धति व आश्रम की व्यवस्था भी भले अलग-अलग हो, परंतु हम सब योगीजी महाराज व गुणातीत समाज के हैं और हमें गुणातीत अस्मिता को धारण करके उसका वहन करते रहना है – यह बात की टकोर भी दादुकाका बार-बार करते थे।

काकाजी की दृष्टि हमेशा इस सिद्धांत की ओर रही और 'सिद्धांत' हमेशा सत्य और सनातन रहता है। संजोग, परिस्थिति व लोग बदल सकते हैं, परंतु उसके कारण सिद्धांत नहीं बदलता। सिद्धांत स्थापित करने के लिए वे संजोग व परिस्थितियाँ इन व्यक्तियों को सानुकूल-अनुकूल करें और उनकी शक्तिओं का सद्उपयोग हो यही सच्चा कौशल्य है। **ऐसी नेतागिरी की सिद्धि ही साहेबदादा का जीवन है।**

हम ऐसा कहते हैं कि **बंसरी खोखली है, सो सभी बजा सकते हैं, लेकिन डंडे को बजा नहीं सकते। डंडे में से सुर निकालने की क्रिया अद्‌भुत कही जाये! प्रभु की शक्ति के बिना यह संभव नहीं है। जो डंडे में से सुर निकाले, तो जरूर मानना कि उसमें प्रभु की शक्ति काम कर रही है।**

हम सभी मोटी बुद्धि वाले हैं। बाँस हमेशा मोटा होता है, लचकदार या धार वाला नहीं होता। इसी प्रकार, हम जैसे जड़ बुद्धि वालों को उन्होंने **भगवान की सेवा में जोड़ा,** यह उनकी कुशलता है। **उनके द्वारा प्रभु की शक्ति काम कर रही है, उसका यह दर्शन है। ऐसा दर्शन दादुकाका ने कराया।** उनकी स्मृतियाँ ऐसे प्रसंग पर ताज़ी होती हैं।

वर्तमान काल में गुरुहरि साहेबदादा भी ऐसी ब्राह्मीशक्ति को धारण करके, उसका उपयोग करके हमें भगवान की सेवा में जोड़ रहे हैं। ऐसे पुरुष सदैव अमर और जीवंत हैं। हमेशा हमारे साथ हैं। उनकी उष्मा, प्रेम, प्रेरणा और कृपा सदैव हम पर बरसती है।

तपोभूमि ब्रह्मज्योति में रहते हम सभी विशेष भाग्यशाली हैं कि बापा और काकाजी ने इस भूमि को तीर्थत्व प्रदान किया और और साहेबदादा ने अपने तपोबल से उस तीर्थत्व का संवर्धन किया है। ऐसी तपोभूमि के हम निवासी, सही अर्थ में तीर्थवासी बन के रहें।

तीर्थवासी बनना बहुत कठिन है। गुणातीतानंदस्वामीजी ने आचार्य महाराज रघुवीरप्रसादजी को जूनागढ़ आकर, समागम करने का जब आदेश दिया, तब उनसे कहा था– **'तीर्थवासी'** होकर आओगे, तो तुम्हारी सभी प्रकार की ग्रंथियों को पिघाल दूँगा। यह **गुणातीत सत्ता व गुणातीत ज्ञान** था और तब रघुवीरजी महाराज अपने आचार्य पद का मान-सम्मान, ओहदा और अपनी शान-शौक़त सब कुछ छोड़ कर, केवल सेवक व **'तीर्थवासी'** बन कर जूनागढ़ आकर रहे। गुणातीतानंदस्वामी ने भी उनके हृदय में महाराज की सर्वोपरी निष्ठा स्थापित कर दी।

यह **'तीर्थवासी'** शब्द हमारे संप्रदाय में इस्तेमाल होता है। ऐसी तीर्थभूमि के हम निवासी हैं। हमें तीर्थवासी बनने का प्रयत्न करना है। **जब हम तीर्थवासी बन जाएंगे, तब इस तीर्थ को तीर्थत्व प्रदान करने वाले प्रगट सत्पुरुष से यथार्थ जुड़ पाएंगे।** गुरु के गुण तभी प्राप्त होंगे, जब उनके साथ का अंतराय मिटे और उन्हें सर्वज्ञ मानेंगे। तब गुणातीतानंदस्वामी की बात साकार होगी।

ऐसे गुरुहरि साहेब दादा हमारे जैसे बन कर, हमारे साथ, हमारे बीच रहते हैं, हँसते-खेलते हैं, भोजन ग्रहण करते हैं, आनंद कराते हैं। आज आम रस की रसोई है... साहेब दादा ने खुद कहा – मैं भी योगीप्रसाद में सभी के साथ प्रसाद लूँगा। साहेबदादा ने स्वयं भोजन किया और आनंद कराते हुए कहा – सभी आग्रह करके मुझे खिलाना... उन्हें इस भोजन में कहाँ रस है ? उन्हें तो हम सब में रस है। वे तो हमें अपना संबंध देकर भगवान से जोड़ना चाहते हैं। उनका यह परिश्रम सफल बने, ऐसी गुरुभक्ति हम अदा करके सही अर्थ में ये प्रसंग मनायें और स्मृति करें। जिन्हें हम अपने **'आदर्श प्रभुस्वरुप'** मान कर पूजते हैं, उनकी मूर्तियाँ प्रतिष्ठित करके, उनके प्रसंगों की स्मृति करते हैं, ऐसे **काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा और शांता बहन** ने अपने समय में ऐसा दिव्य जीवन जिया है। परंतु, **वही जीवंत मूर्ति – प.पू. साहेबजी जो हमारे बीच मानवरूप में मौजूद है, उनके प्रति सम्यक् दिव्यभाव और उनके संबंधवाले भक्तों के प्रति सम्यक् निर्दोषबुद्धि दृढ़ हो, यही एक मात्र हमारी साधना है।** उनके प्रति सतत जाग्रत रह कर जीने का बल वे हमें दे रहे हैं।

साहेबदादा ने मंगल प्रभात की सभा में उपासना का दूसरा सिद्धांत बताया था –

गुरु गोविंद दोऊ खड़े किसको लागुं पाय, बलिहारी गुरुदेव की, जिसने गोविंद दियो दिखाय।

आज सुबह समाधि पर बात चल रही थी कि बड़े पुरुषों का उपकार हमें कैसे मानना चाहिये ? साहेबदादा ने ऐसा कहा कि पहले गुरु के चरण स्पर्श करने चाहिये। क्योंकि प्रभु की पहचान गुरु ने हमें कराई और उन्होंने हमें प्रभु के साथ जोड़ा। विशेषता यह है कि अपने साथ नहीं, प्रभु के साथ जोड़ा और फिर स्पष्ट भी किया कि यदि पहले गुरु के चरण स्पर्श करके, फिर प्रभु के चरण स्पर्श करेंगे तो प्रभु को बुरा नहीं लगेगा। इस प्रकार हमारे मन की कई मान्यताओं और नासमझीयों का निराकरण कर दिया।

काकाजी का बड़प्पन यह है कि उन्होंने हमें योगीजी महाराज की पहचान कराई। हम कई बार तीन फरवरी की महिमा की बातें करते हैं, 7 मार्च को हम ब्रह्मसमाधि की बातें करते हैं। **दादुकाका हमारे गुणातीत समाज के गुरुस्थान पर हैं। उन्होंने हमें प्रभु की पहचान कराई, प्रगट प्रभु की पहचान कराई, प्रगट का सिद्धांत समझाया। प्रगट की रुचि और अभिप्राय में जीवन जीने की कला सिखाई** और... विशेष रूप से तपोभूमि **ब्रह्मज्योति के व्रतधारी साधकों व निवास करते मुक्तों पर दादुकाका ने दूसरा एक बहुत बड़ा उपकार यह किया कि उन्होंने हमें प.पू. साहेबदादा की महिमा समझाई।** विद्यार्थी अवस्था में साहेब के साथ हमने पढ़ाई की, छात्रालय के निर्माण का कार्य साथ में किया। योगीजी महाराज की आज्ञा से उत्सव किये, सेवाएँ कीं। पर, इस दौरान **1966 तक काकाजी ने हमें दृढ़ करा दिया कि 'जसुभाई कोई अलग तत्त्व हैं।'**

केवल साहेब ही नहीं, जहाँ हरिप्रसादस्वामी का मंडल हो, जहाँ मुकुंदस्वामी का मंडल हो, जहाँ जिस-जिस सद्‌गुरु का मंडल हो, वहाँ जाकर उनके सद्‌गुरु की पहचान, उनके माहात्म्य का सिचंन दादुकाका ने किया और उस सद्‌गुरु से जुड़ कर, उनका ही होकर जीने की बात दृढ़ कराई। दादुकाका का यह हम पर बहुत बड़ा ऋण-उपकार है।

इस प्रकार हम उन्हें सतत याद करें कि आपने बापा के साथ हमारा मिलाप करवा दिया, आपने साहेब के साथ

हमारा मिलाप करवा दिया और उसके कारण समग्र गुणातीत समाज के सभी संतों, मुक्तों, भक्तों के साथ भी मेल करवा कर **'एकता यही एकांतिकभाव'** सूत्र दिया। **प्रेम और आत्मीयता की गंगोत्री का ऐसा प्रवाह दादुकाका ने 'ताड़देव' से सारे गुणातीत समाज में बहाया।** उसका कीर्तन भी संतों ने आज गाया कि ताड़देव को तख़्त बना कर वे सदा साकार प्रगट रहे।

इस **गुणातीतभाव को हमें पाना है और गुणातीतभावना को धारण करके हम सबको जीवंत रखना है। प्रगट की यह सच्ची उपासना है।** गुरु गुणातीत को साथ में लेकर स्वामिनारायण भगवान स्वयं आये। इसलिए हम भगवान और संत की बात समझने में सक्षम बने। गुणातीत समाज के त्यागी संतों, व्रतधारी युवकों, संन्यासी बहनों या गृहस्थ मुक्तों का चार पंखुड़ियों वाला समाज–जो जिस आश्रम में जीवन जीता हो, वे सभी अपने आश्रम में – स्वधर्म में रह कर प्रगति करें।

इस गुणातीत समाज के प्रतीक के रूप में हमने ध्वज भी बनाया और जब कोई भी प्रसंग हो, तब वह ध्वज हम फहराते हैं। काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी और साहेबदादा की मंगल हाज़िरी में हमने आम्रवृक्ष के नीचे ब्रह्मज्योति की नींव डाल कर **गुणातीत समाज का यह ध्वज** फहराया था। ये अद्‌भुत स्मृतियाँ हमारे साथ–इस तपोभूमि के साथ जुड़ी हुई हैं। **उसकी गरिमा, उसका गौरव, उसकी पवित्रता बरक़रार रहे और उसका संवर्धन हो उसकी सामूहिक जिम्मेदारी हम सबकी है।** साथ मिल कर उसे हम निभायें। प्रभु के कार्य में सब मन पिरो कर जुड़ जायें और गुरु की प्रसन्नता का पात्र बनें, ऐसी प्रार्थना करने का भी आज मंगल अवसर है।

गुरुहरि साहेबदादा हम सब पर ऐसी मंगल कृपा बरसायें। नींव में जो गृहस्थ हमारे साथ जुड़े, जिन्होंने अपना धन, धाम, कुटुंब, परिवार समग्र अर्पण किया, संतों ने भी जिस प्रकार जीवन अर्पण किया और मन अर्पण करने की जो साधना हो रही है – ये सारी बातें धीरे-धीरे, प्रसंग-प्रसंग पर हमें समझ में आती जा रही हैं।

समय तो पंख लगा कर उड़ रहा है। **अब जीवन पद्धति भी बदलती जाएगी। इस बदलाव के साथ भी हम हमारे जीवनमूल्यों को संभाले रख कर बदलते जायें।**

साहेबदादा ने एक मार्मिक सूचन किया था कि मेरे अंदर बदलाव आये। नया मंदिर बना और नूतन मूर्तियों की उसमें स्थापना हुई, तो उसके अनुसार हमारे अंदर भी नूतन मंदिर बने, प्रभु की मूर्ति स्थापित हो। ऐसा अद्‌भुत मौका साहेब ने इस लॉकडाऊन के समय में तो दिया, लेकिन लॉकडाऊन खुलने के बाद भी हमें यह बात को रख कर जीना है। **जीवन तो चलता रहेगा, लेकिन हम जो जियें उसे ही जीवन कहा जाये।** हाथ पर हाथ रख कर हम कब तक बैठे रहेंगे? जो नियम हैं, उनका पालन करके, जो कुछ भी करना है, वह करके प्रभु से प्रीति के रूप में जीने का दृढ़ संकल्प करें और जीवनमुक्त बन कर, हमारे जीवन को कृतार्थ करें। इसके लिए प्रभु अद्‌भुत शक्ति और भक्ति दें, ऐसी मंगल प्रार्थना। सभी को इस मंगल पर्व के भावभरे जय श्री स्वामिनारायण!

(संक्षिप्त : ध्वनिप्रसारण में से उद्‌धृत)

श्रीजी चरणों में विलीन कई मुक्त कह गये अलविदा...

पू. संकल्पस्वामीजी (दिल्ली)

दिल्ली–अशोकविहार मंदिर में प.पू. गुरुजी की निश्रा में साधु की दीक्षा प्राप्त करके, जीवन धन्य करने वाले **पू. संकल्पस्वामीजी** कोरोना संक्रमण से करीब पंद्रह दिन जूझने के बाद, 10 **मई** को अक्षरधाम सिधारे.... 1951 में इसी दिन गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने स्वधामगमन किया था।

सतीष शर्मा के रूप में वे अपने माता-पिता के साथ बचपन से ही गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. गुरुजी से जुड़ गये। प.पू. गुरुजी के प्रेम वश 15 साल की उम्र में स्कूल की गर्मियों की छुट्टी में मंदिर रहने के लिए आये और फिर यहीं के होकर रह गये। उनका सरल और मृदु स्वभाव देख कर प.पू. गुरुजी ने भी उन्हें सेवक की ड्रेस देकर **'निर्दोष'** नाम दिया। गुरुहरि काकाजी के अंतर्धान होने के बाद, पू. संकल्पस्वामीजी ने **7 मार्च 1998** के दिन **प.पू. गुरुजी से पार्षदी दीक्षा ली और 15 मार्च को प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी से भागवती दीक्षा ली थी।**

प्रभु हरेक को कोई न कोई गुण बख़्शिश में देते हैं। पू. संकल्पस्वामीजी कम बोलते, शर्मीले व अपेक्षारहित थे। इसलिये कई सेवायें करते हुए भी, वे सामने दिखते नहीं थे। यह उनका बड़प्पन था।

- ❖ सेवक के रूप में कई सालों तक प.पू. गुरुजी की सेवा में वे रहे थे, सो प.पू. गुरुजी की ज़रूरतों को जानते थे। इसलिये दिन हो या रात, प.पू. गुरुजी जब भी आराम में जाते, वे बिना किसी के बुलाये प.पू. गुरुजी के सिर पर हाथ फेरने के लिये आ ही जाते।
- ❖ सुबह ठाकुरजी के लिये नाश्ता बनाने की सेवा अहोभाव से करते। पू. सुहृदस्वामीजी को देखना नहीं पड़ता था कि नाश्ते में क्या बनने वाला है?
- ❖ उत्सवों में यदि भोजन ज़्यादा बच जाये, तो उसे आसपास भक्तों को भिजवाते, ताकि ठाकुरजी का प्रसाद बिगड़े ना।
- ❖ प.पू. गुरुजी द्वारा सभा में की गई बातों को अमल में लाने की वे चेष्टा करते थे। एक बार गुरुहरि योगीजी महाराज की सेवाओं का ज़िक्र करते हुए, प.पू. गुरुजी ने कहा कि मंदिर के टॉयलेट-बाथरूम इत्यादि साफ़ रखने से एक ओर भक्त राज़ी होंगे; और दूसरी ओर हमारा अंतःकरण साफ़ हो जायेगा। प.पू. गुरुजी की यह बात पकड़ कर, रात को सबके सोने के बाद वे मंदिर के बाथरूम्स साफ़ करते।
- ❖ जो भी नया सेवक प.पू. गुरुजी की सेवा में आये, उसे प.पू. गुरुजी को राज़ी करने का तरीका सिखाते थे।
- ❖ जो भी भक्त उनके पास आते, उन्हें गुरुहरि काकाजी और प.पू. गुरुजी की महिमा के प्रसंग बताते।

पू. संकल्पस्वामीजी ने अपने वर्तन से कइयों को एक बड़े भाई के रूप में गाइड किया, तो कइयों के वे दोस्त बने। निम्न मुक्तों द्वारा दी गई श्रद्धांजलि से ख्याल पड़ता है कि पू. संकल्पस्वामीजी ने मुक्तों के दिलों में कैसा स्थान लिया था! अपनी कई सेवाओं, मित्रभाव और सुहृदभाव के लिए वे सदैव याद आयेंगे...

जय स्वामिनारायण – **संकल्प**

क्या ये जहाँ कुछ रास नहीं आया ?
हमें विरही छोड़ कर वतन (अक्षरधाम) तुम चले गये।
भक्तों से तो प्यार अधिक था।
कम शब्दों में सेवा की, पर अभिमान ना आया मन में कभी।
होगा मिलन अब तुम्हारा रोज़ काकाजी और नारायण से।
हमारा भी प्रणाम तुम कह देना उनको। ना हो गुस्ताखी हमसे कभी कोई।
सेवा तुम जैसी भक्तों की हम भी करें। यह **'संकल्प'** भी पक्का हम करें।
गुरुजी की बात हो सर्वोपरि, बस यही आशीर्वाद स्वामी देना तुम।

– पू. रमेशभाई त्रिवेदी (मुंबई)

A friend he was
Would always care
A true guide he was
Was never unfair
His love so pure
It was so rare
Always with a smile
And a kind hearted stare
Made u believe that
Guruji is always there
His life and actions
Were open and bare
He made your heart soft
So u could also share
U did not have to call him
Was silently everywhere
He was a true saint
Would still love us and care
Though he is with Kakaji
Can feel his warmth here.
Love u always Sankalpswami

– P. Chintan Aggarwal (Delhi)

पू. मल्कानी अंकल (दिल्ली)

गुरुहरि काकाजी के संकल्प से दिल्ली मंदिर के लिए प.पू. गुरुजी से जुड़े और मंदिर के पार्ट एन्ड पार्शियल बने **पू. मल्कानी साहेब 9 मई** की सुबह हार्ट एटैक के कारण अक्षरधाम सिधारे। गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों को जब यह खबर दी गई, तो सभी अचंभित हो गये। पू. मल्कानी अंकल केवल दिल्ली मंदिर – प.पू. गुरुजी से ही नहीं जुड़े थे; बल्कि प.पू. गुरुजी की प्रेरणा से–गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के प्रति उनका एक जैसा झुकाव-अपनापन था, सो वे सभी को अपने निजी लगते थे। **यह था–काकाजी से आत्मसात् करी पू. मल्कानी अंकल की सर्वदेशीयता का प्रभाव!**

हम सभी जानते हैं कि दिल्ली मंदिर के निर्माण कार्य में 70-80 प्रतिशत

उनका योगदान रहा और साथ ही साथ गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में भी उन्होंने समय-समय पर खूब सेवा दी। गुणातीत समाज के सभी को वे अपना मानते। इसलिये अपने फार्म हाऊस पर **समय-समय पर गुरुहरि पप्पाजी को बहनों के साथ, प.पू. स्वामीजी को संतों के साथ, संतभगवंत साहेबजी को युवकों के साथ शिविर करने के लिए वे निमंत्रित करते।**

शिविर करने में असुविधा न हो, इसलिये फार्म पर उन्होंने **'काकाजी प्रार्थना हॉल'** बनवाया, **'नंदिनी'** रसोईघर और बाथरूम युनिट्स बनवाये। पैसे से सेवा तो बहुत लोग करते हैं, लेकिन जिस अपनेपन से पू. मल्कानी अंकल एवं उनके परिवार ने विनम्रता व निःस्वार्थ भाव से सेवा की है, वो अवर्णनीय है और कभी भूली नहीं जा सकती।

पू. मल्कानी अंकल बुद्धिशाली व्यापारी थे, जो हमेशा अपना मुनाफ़ा ही देखते थे। सो, प.पू. गुरुजी के मार्गदर्शन में उन्होंने अपनी जीवनशैली को सत्संग के ढांचे में ढाला। जिस सिन्सियारिटी और लगन से उन्होंने व्यापार की चरम सीमा तक पहुँचने की कोशिश की, वैसी ही अभिलाषा से प्रभु प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर हुए। जीवन में जब भी व्यावहारिक उतार-चढ़ाव आये, तो गुरुहरि पप्पाजी और प.पू. गुरुजी जैसे समर्थ सारथी का हाथ थाम के, बिना किसी स्पंदन वे सब कुछ सहर्ष स्वीकारते गये। दिल और होंठों पर बस **'स्वामिनारायण मंत्र'** का रटन करते हुए, **गुरुहरि योगीजी महाराज का कथन** दोहराते – **उलझन आये तो माला फिराओ...** इसी को अपना जीवनमंत्र मान कर, **वे अजपाजप करते रहते** और सभी के लिए एक आदर्श स्थापित किया कि गुरु साथ हों तो फिर क्या कमी है, अंधेरों से भी रोशनी मिलती है... सच, **पू. मल्कानी अंकल जैसे सर्वदेशीय भक्तराज की कमी ज़रूर खलेगी और सभी स्वरूपों के साथ के निराले संबंध के रूप में वे हमेशा याद रहेंगे।**

पू. प्रकाशकुमार त्रिवेदी (अमदावाद)

गुरुहरि काकाजी की आज्ञा से प.पू. गुरुजी 1967-68 में दिल्ली आये। तब स्वामिनारायण सत्संग को कोई जानता नहीं था। मुश्किल से तीन-चार कुटुंब थे, जो परिचित थे। उनमें से एक अक्षरनिवासी **पू. हसमुखराय जानी साहेब** का परिवार था, जो मूलतः स्वामिनारायण संप्रदाय से जुड़ा हुआ था। उनके सुपुत्र **पू. कीर्तिभाई व पुत्रवधु सौ. शोभना जानी** और **पू. योगेशभाई व पुत्रवधु हेमा जानी** एवं पुत्री **पू. जस्मिन** व दामाद **पू. प्रकाशकुमार त्रिवेदी** परिवार सहित सत्संग से जुड़ गये।

22 मई को पू. प्रकाशकुमार कोविड संक्रमण से **अक्षरनिवासी हुए।** प.पू. गुरुजी के प्रति पू. प्रकाश कुमार के दिल में खूब आदर, अपनापन और भक्तिभाव था। अमदावाद के मणिनगर में उनकी दुकान **'सजावट'** पर प.पू. गुरुजी पधारते, तो श्री ठाकुरजी की सेवा के लिए वे कलात्मक सामान सेवारूप देते। दिल्ली में आयोजित **2017 के 'बंधुजोड़ी शताब्दी उत्सव' में भी, उन्होंने सजावट का सामान सेवा में देकर अपनी**

उदात्त भावना और अपनेपन का परिचय दिया था।

इन्हें श्रद्धा सुमन अर्पण करते हुए, भगवान स्वामिनारायण, गुरुहरि काकाजी व गुणातीत स्वरूपों से प्रार्थना कि उनके परिवार के सदस्यों को बल दें और प्रगट संत से संबंध दृढ़ करके वे तन, मन, धन और आत्मा से सदा सर्वथा समृद्ध और संपन्न रहें...

पू. डॉ. रोशनलालजी (सिरसा)

कोविड के कारण **6 मई को** काकाजी के समय के पुराने जोगी **पू. डॉ. रोशनलालजी** अक्षरनिवासी हुए। वे करीब 75-76 वर्ष के थे। 1978-79 में **पंजाब के गाँव सबद्धी कलाँ** के धर्मपालजी की प्रार्थना पर, गुरुहरि काकाजी महाराज वहाँ की धरती को पावन करने गये और पूर्व के मुक्तों को सत्संग से जोड़ लिया। उसमें पू. डॉ. रोशनलालजी एवं उनकी पत्नी पू. शमशाद भाभी भी गुरुहरि काकाजी की कृपा के पात्र बने। गुरुहरि काकाजी के अंतर्धान होने के बाद, वे उसी प्रकार प.पू. गुरुजी से जुड़ गये। हरियाणा-सिरसा में रहते थे, लेकिन परिवारसहित उत्सवों में और कभी-कभी ख़ास दर्शन के लिए भी दिल्ली मंदिर आते रहते।

'काकाजी-काकाजी' रटन करते वे थकते नहीं थे। दोनों हाथ ऊपर करके, मूर्ति में लीन होकर, ज़ोर से पुकार करके, जब वे कहते– काकाजी, आप मेरे हैं... तो ऐसा लगता वे गुरुहरि काकाजी से साक्षात् वार्तालाप कर रहे हैं।

ऐसी धुन से वे सबके लिए आदर्श स्थापित करके गये हैं कि भजन तो सब कुछ भूल कर लय और लीन होकर करना चाहिये। भजन के समय बस यही भावना होनी चाहिए – 'मैं और मेरे प्रभु – उसके अलावा कुछ नहीं...'

पू. संतोष पाठकजी (उ.प्र.–भदोही)

4 मई को कोरोना के कारण ही **पू. संतोष पाठकजी** ने कम उम्र में देहत्याग किया, यह जान कर पूरे सत्संग समाज को बहुत दुःख हुआ।

प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी के संबंध से पू. संतोष पाठकजी दिल्ली मंदिर आये। प.पू. स्वामीजी का संबंध देख कर और उनके प्रति अपनी भक्ति मान कर प.पू. गुरुजी ने पू. संतोष पाठकजी को खूब संभाला। समय-समय पर आऊट ऑफ धी वे जाकर, प.पू. गुरुजी ने उनकी व्यावहारिक समस्याओं का समाधान किया। फलस्वरूप जिस अपनेपन से पू. संतोष पाठकजी प.पू. स्वामीजी से जुड़े थे, वैसे ही प.पू. गुरुजी से जुड़ गये।

अपने जीवन के **छोटे-बड़े सभी कार्य प.पू. गुरुजी से पूछ कर करना उन्होंने अपनी जीवनशैली बना ली।** प.पू. गुरुजी के साथ ऐसा संबंध था कि उनसे कोई ग़लती होने पर, उन्हें डाँटने से प.पू. गुरुजी हिचकते नहीं थे।

उनकी खूब चाहना रही कि उनका पूरा परिवार सत्संग से जुड़े। प्रभु ने उनकी पुकार सुनी, तो उनकी दो बेटियाँ साध्वी चंदन व साध्वी केसर अक्षरज्योति में प.पू. दीदी की निश्रा में भगवान भजने अग्रसर हुई हैं।

पू. संतोषजी बहुत तन्मयता से धुन करते थे। प.पू. गुरुजी के नज़दीक बैठ कर, जब ज़ोर-ज़ोर से ताली बजाते हुए वे धुन करते, तो मानो उन्हें सुधबुध नहीं रहती थी–उनकी डायरेक्शन भी बदल जाती थी। समूह में भी उनकी धुन की आवाज़ खूब गूँजती थी। सत्संग की ऐसी पूँजी वे अपने परिवार को देकर गये हैं।

जब से कोरोना संक्रमण की शुरुआत हुई, तब से **उनका पुत्र पू. हर्षित** मंदिर में संतों की सेवा करते हुए पढ़ाई करता है। पू. संतोषजी का निधन होने पर, वह जब अंतयेष्टि करके लौटा और फिर अपने दादा के पास उसे अन्य औपचारिकताएँ पूरी करने बनारस जाना था, तो उसने प.पू. गुरुजी से प्रार्थना कि–यह सब करने मैं जा रहा हूँ, पर फिर **कहीं मेरी मंदिर की सेवा तो छूट नहीं जायेगी?** यह बात विडियो कॉल पर **पू. दालिया साहेब** को बताते हुए प.पू. गुरुजी खुद भावुक हो गये थे।

18 वर्षीय हर्षित ने साबित कर दिया कि सच्चे सगे प्रभु, संत और सत्संगी ही हैं।

यूँ अपनी सेवा, भावना और विरासत द्वारा पू. संतोषजी सदैव याद आयेंगे।

पू. सतपाल यादवजी (दिल्ली)

24 अप्रैल को दिल्ली सत्संग समाज के आत्मीय स्वजन **पू. सतपाल यादवजी** कोविड संक्रमण से अक्षरनिवासी हुए। **पू. विजयपाल यादवजी के वे कज़िन भाई थे।** संत प्रधान जीवन जीने की भावना से वे परिवारसहित सत्संग से जुड़े। कम उम्र में उन्होंने हमारे बीच से स्थूल विदाई ली। पर, अपने परिवार को सत्संग की विरासत देकर गये हैं।

जिस दिन पू. सतपालजी अक्षरनिवासी हुए, तब कोविड के कारण उनकी पत्नी **पू. सरोज भाभी** की हालत भी नाज़ुक थी। सो, उन्हें कुछ भी बताये बिना, हरियाणा – यमुनानगर के 'गाबा' अस्पताल में भेजा गया। 2 मई को वे दिल्ली लौटीं, तो सबको यह डर था कि उनके पति सतपालजी के बारे में कैसे बताया जाये? पर, प.पू. दीदी के बताये जाने पर पू. सरोज भाभी स्टेबल रहीं और बोली –

मेरे लिए तो सबसे पहले गुरुजी, दीदी और मंदिर के सब हैं, बाकी सब बाद में...

यह सुन कर सभी स्तब्ध हो गये! कहना आसान है, लेकिन पू. सरोज भाभी ने जिस प्रकार वर्त कर दिखाया, उससे स्पष्ट हो गया कि पूर्व के जबरदस्त संबंध के बिना यह संभव ही नहीं है। श्रीजी महाराज के समय के ऐसे प्रसंग सुनते हैं, यहाँ वो तादृश देखने को मिला।

सच, सतपालजी के अक्षरनिवासी होने पर उनकी पत्नी, पुत्र पू. वरूण और पुत्री पू. ईशा ने खूब स्टेबल रह कर सत्संग की गरिमा बनाये रखी। मौके पर बता दिया उनके जीव में सत्संग कितना बसा है। ऐसे मुक्तों को देख कर दिल नतमस्तक हो जाता है और प्रेरणा मिलती है।

सतपालजी भले ही हमारे साथ नहीं हैं, लेकिन अपनी आत्मीयता से हमेशा सभी के दिलों में रहेंगे।

पू. झांझी साहेब (पंजाब-जगरांव)

19 अप्रैल को **गुरुहरि काकाजी के समय** के आत्मीय पुराने जोगी **पू. जीवनलाल झांझी साहेब,** जो दो-तीन महीने से बीमारी के कारण असहनीय पीड़ा से गुज़र रहे थे, वे अक्षरनिवासी हुए।

धार्मिक एवं सामाजिक प्रकृति के पू. झांझी साहेब बहुत ही सुलझे हुए, विचक्षण एवं परोपकारी थे। पंजाब के लुधियाना, सबद्धी कलां और जगरांव में जब गुरुहरि काकाजी महाराज ने स्वामिनारायण की अलख जगाने की शुरुआत की, तब पूर्व के बलिष्ठ संस्कार के कारण, पू. झांझी साहेब प.पू. काकाजी से निजी तौर पर जुड़ गये। प.पू. गुरुजी के प्रति भी उनकी छुपी प्रीति थी।

एक बार उनके किसी नज़दीक के रिश्तेदार के यहाँ किसी की शादी की तारीख पक्की हुई। संजोग से उसी दिन प.पू. गुरुजी का प्राकट्योत्सव था। प.पू. गुरुजी को अपने जीवन में प्राथमिकता देते हुए, पू. झांझी साहेब ने उन्हें कह दिया कि **जिस दिन आपके यहाँ शादी है, उसी दिन हमारे गुरुजी का जन्मदिन है।** मैं शादी में नहीं आ पाऊंगा और **यदि आप चाहते हैं कि मैं शादी में आऊँ, तो शादी की तारीख बदल लें।** इस प्रसंग से **ख्याल पड़ता है कि उनके जीवन में प.पू. गुरुजी की क्या अहमियत थी!**

पू. झांझी साहेब करीब चालीस वर्ष से परिवार सहित सत्संग समाज से घनिष्ठता से जुड़े रहे। सभी हरिभक्तों के साथ भी आत्मीयता रखते हुए अपनेपन से सहाय रूप बने। जगरांव में **'स्वामिनारायण चौक'** बने, यह भक्तों की दिली इच्छा थी, उसके लिये वे स्वयं कई हरिभक्तों के साथ काफ़ी प्रयत्नशील भी रहे और... सबकी भावना और श्रद्धा से चौक बन भी गया।

पू. झांझी साहेब सत्संग की जो दिव्य विरासत छोड़ गये हैं, इस पूँजी को परिवार बरक़रार रखे यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि है।

भजन

(राग – तेरे नैना ऐसे काफ़िर..)

मिला ऐसा अंतर्यामी, जाने मेरी सारी खामी...
मिला ऐसा अंतर्यामी, जाने मेरी सारी खामी,
फिर भी रखता ना तू हमसे दूरियाँ...
तेरी मूर्ति, तेरी स्मृति; हो जो उसमें अखंड वृत्ति,
खोलें मन की गाँठों की डोरियाँ...
तू ही गुरु मेरा, तू ही परमात्मा
तू ही साँस मेरी, तू ही मेरी आत्मा
काका ने ऐसा राहबर दिया
सौ जननी का, प्यार जो भुला दे,
प्रियवर गुरु ऐसा मिला...
सौ जननी का, प्यार जो भुला दे,
प्रियवर गुरु ऐसा मिला...
करें और किस सुख की अभिलाषा, -2
जीतेजी धाम यहीं पे मिला...
सौ जननी का, प्यार जो भुला दे,
प्रियवर गुरु ऐसा मिला... -2

पलकें खुली हों या फिर बंद हों, तेरी मूरत उसमें हरदम हो,
हो... पलकें खुली हों या फिर बंद हों, तेरी मूरत उसमें हरदम हो,
पल-पल मेरे साथ तू रहता, ये अनुभव भी तू ही कराता,
डग-डग पर तूने ही संभाला,
प्रियवर गुरु ऐसा मिला...
सौ जननी का, प्यार जो भुला दे,
प्रियवर गुरु ऐसा मिला... -2

मैं जीना, तेरा हो के ही मैं जीना,
बिना तेरे कुछ भी कहीं ना,
तेरी मरज़ी में मिट कर जीना ओ... ओ...

है काफ़ी, तेरी रहमोनज़र ही काफ़ी,
तेरा दर्शन पाना काफ़ी,
बस तुझमें डूबना काफ़ी, यारा...
हमें काफ़ी तेरी अँख का इशारा... -2
प्रियवर गुरु ऐसा मिला...
सौ जननी का, प्यार जो भुला दे,
प्रियवर गुरु ऐसा मिला... -3

चातुर्मास दौरान

[यानि दिनांक 20 जुलाई, मंगलवार (देवशयनी एकादशी) से 15 नवंबर, 2021 सोमवार (प्रबोधिनी एकादशी) तक]

भगवान और संत की प्रसन्नता हेतु सभी सत्संगी निम्न नियमों का पालन करें।

1. सावन के महीने यानि – 9 अगस्त, सोमवार से 6 सितंबर, सोमवार तक एक बारी भोजन लें।
2. **चातुर्मास दौरान हर महीने या सिर्फ सावन के महीने में–**
   मंदिर के स्टाफ यानि 60 जनों के लिए एक दिन कॅश द्वारा भोजन की सेवा दें।
3. 20 जुलाई, मंगलवार- नियम की एकादशी, 30 अगस्त, सोमवार - जन्माष्टमी
   17 सितंबर, शुक्रवार - जलझीलनी एकादशी, 15 नवंबर, सोमवार - कार्तिक शुक्ला एकादशी इन चारों दिन व्रत रखें।
4. चातुर्मास दौरान यथाशक्ति **'महापूजा'** करवाएं।
5. रोज़ सुबह या सायं **'गुणातीत स्वरुपों'** की स्मृति सहित **पंद्रह मिनिट** कपालभाँति, अनुलोम-विलोम, भस्त्रिका **प्राणायाम** करें।
6. चातुर्मास दौरान हमारे हिन्दी प्रकाशन 'ब्रह्मविद्या' एवं 'मंत्रशक्ति' पुस्तक का पारायण करते हुए उन बातों पर मनन –चिंतन करें।
7. **सावन महीने के दौरान–**
   (क) 'बॅप्स' द्वारा प्रकाशित **'भगवान श्री स्वामिनारायण एक दिव्यजीवन गाथा'** के तीन पन्नों का नित्य पठन करते हुए पारायण करें।
   (ख) 'गुजराती' भाषा जानते हों, वे **'स्वामी की बातें'** या हिन्दीभाषी मुक्त **'उपदेशामृत'** का पारायण करें।
   (ग) **'भगवत् कृपा'** के पिछले अंकों में आई संतों - मुक्तों की ज्ञानवार्ता का क्रमशः नियमित रूप से रोज़ पाठ करते हुए उस पर मनन - चिंतन करें।

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 21.6.'21, सोमवार – भीम एकादशी, व्रत

(2) दि. 24.6.'21, गुरुवार – वटसावित्री

(3) दि. 5.7.'21, सोमवार – एकादशी, व्रत

(4) दि. 12.7.'21, सोमवार – रथयात्रा

(5) दि. 20.7.'21, मंगलवार – **देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ**

(6) दि. 23.7.'21, शुक्रवार – **गुरुपूर्णिमा**

R.N.I. 28971/77 ***(Air Mail)***
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A - 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI - 110 052